भारत एवं राजस्थान सरकार द्वारा विज्ञापनों के लिए मान्यता प्राप्त

आरएनआई पंजीयन RAJHIN/2016/72902

डाक पंजीयन RJ/ UD/ 29-150/ 2023-2025

शब्द रंजन

संस्थापक एवं संरक्षक डॉ. महेन्द्र भानावत

विचार एवं जनसंवाद का पाक्षिक

वर्ष 9 | अंक 03 | उदयपुर गुरूवार 15 फरवरी 2024 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.

समय-लीला के मंच पर हम मंचेता मात्र

डॉ. रामगोपाल शर्मा 'दिनेश'

डॉ. दिनेश उदयपुर के सुखाड़िया विश्वविद्यालय (तब उदयपुर विश्वविद्यालय) में हिन्दी विभागाध्यक्ष रहे। सन् 1965 में विश्वविद्यालय से पीएच. डी. शोध प्रारम्भ कराने में उनका महत्त्वपूर्ण योग रहा। वे प्रथम गाइड बने और सर्वप्रथम डॉ. महेन्द्र भानावत को अपने निर्देशन में 'राजस्थानी लोकनाट्य परम्परा में मेवाड़ का गवरी नाट्य और उसका साहित्य' विषय पर पीएच.डी. कराई। सन् 1968 में प्रथम दीक्षांत समारोह में उन्हें यह उपाधि मिली। वर्तमान में डॉ. दिनेश नोएडा में साहित्य की साधना में सृजनरत हैं। 'शब्द रंजन' लगातार पढ़ते हैं और तब के समय की आज के समय से तुलना करते इधर की साहित्यिक गतिविधियों के सम्पर्क में रहते हैं। यहां उनका समय और मानव के अन्त:सम्बन्धों पर जो आलेख प्रकाशित किया जा रहा है उसमें उनके अनुभव जगत का समय भी प्रकारांतर से मुंह बोलता निखर रहा है। - सं.

आपका मेरा, उसका, किसी भी जीव का शरीर इसी प्रकार हर पल बदल रहा है। शरीर में, समय द्वारा संचालित शक्तियां बदल रही हैं। हमारे आकार- प्रकार नित्य बदल रहे हैं। विचार बदल रहे हैं आचार बदल रहे हैं। यही तो समय है। मनुष्य और जानवर में अंतर इतना ही है कि जानवर पेट भरने पर अपनी शिकार का बचा हुआ अंश बिना किसी माया-मोह के, वहीं पड़ा छोड़ कर चला जाता है, जबकि आदमी का पेट अरबों-खरबों की सम्पत्ति से भी नहीं भरता। वह बहुत बड़ा चिंतक तो बन जाता है, किंतु यह नहीं समझ पाता कि समय उसे जन्म से आगे नहीं बढ़ाता, जहाँ तक लाया है, वहाँ से आगे वह कुछ भी नहीं ले जा सकता। समय ऐसा पूर्ण विराम लगाता है कि मनुष्य की सारी शक्तियाँ मिलकर भी उसकी राख तक को साथ नहीं जाने देतीं। आश्चर्य है कि अपनी आँखों से इस सत्य को देखता हुआ भी मनुष्य अपने जीवन के लिए सही मार्ग नहीं चुनता।

समय अनादि और अनंत है। वह शून्य है और संपूर्ण भी है। वही अकाल है, वही त्रिकाल है। 'वह', 'तुम' और 'मैं' उसी के सर्वनाम है। उस पर किसी का अधिकार नहीं है। कर्ता और अकर्ता वही है। मद, मोह और अहंकार उसी के त्रिगुण हैं। इन्हीं गुणों की रस्सी से वह पृथ्वी, आकाश और पाताल को बाँधता है। वही जन्म लेता है, पलता है और मरता है। सभी जीवों में वही दृष्टव्य और अदृष्टव्य है। समय की लीला अपार है। सम्पूर्ण सृष्टि उसका अद्‌भुत नाटक है। हम सब इस नाटक के पात्र हैं। हम वह हैं जो अभिनय सौंपता है, वही हम सब करते हैं। भारतीय दर्शनों में जो चिंतन मिलता है, वह इस तथ्य का साक्षी है कि हर व्यक्ति केवल अपने समय तक सीमित नहीं, अतीत और भावी सृष्टि के समय से भी बंधा हुआ है। इसी बंधन का नाम जीवन है।

हम सब जन्म लेते हैं। माता-पिता से पोषित और प्रकृति से पालित होते हैं। हमें जीवनयापन के लिए समाज मिलता है जो किसी देश-प्रदेश की प्रवृत्ति से पुष्पित-फलित होता है। प्रकृति कभी स्थिर नहीं रहती, वह क्षण-क्षण बदलती है। आप मिट्‌टी में बीज डाल कर देखिए। पानी मिलते ही समय पाकर अंकुर फूट निकलता है। जो नहीं था, वह प्रकट हो जाता है। अग्नि धूप बनकर उसका पोषण करती है। समय चल पड़ता है। दिन बीतता है। आप तो उसे पानी देते हैं। सूरज धूप और छाया देता है। आप सोने से पहले देखते हैं कि अंकुर में आकार आ गया, दल फूट निकले। आप सो गए और सुबह जब जागे तो आश्चर्य में पड़ गए। अंकुर से लता बने उस बीज ने मन मोहकर पुष्पों का रूप धारण कर लिया। समय के साथ यह सब हुआ। रात में वह लता अन्य रूप भी धारण कर सकती थी।

आपका मेरा, उसका, किसी भी जीव का शरीर इसी प्रकार हर पल बदल रहा है। शरीर में, समय द्वारा संचालित शक्तियां बदल रही हैं। हमारे आकार-प्रकार नित्य बदल रहे हैं। विचार बदल रहे हैं। आचार बदल रहे हैं। यही तो समय है। वह निरंतर परिवर्तनशील है। वह हमारे आचार-विचार से संस्कृति गढ़ रहा है। सभ्यता का विकास या ह्रास कर रहा है। हमारा अर्थात मानव जाति का इतिहास और कुछ नहीं, यह परिवर्तनशील समय है। आप और हम कोई भी, जो कल थे, वह आज नहीं हैं तथा आगे भी नहीं रहेंगे। समय का यह स्वभाव इतना विचित्र है कि उसके साथ हम सब निरंतर बदलते हुए अपनी भिन्न पहचान बनाते जाते हैं। ऐसी स्थिति में जब हम स्वयं को ही नहीं समझ पाते, तब सृष्टि के रहस्यों को कैसे अंतिम रूप में समझ सकते हैं। हम सब केवल समझने की यात्रा में समय का साथ दे सकते हैं। मानव जाति की जीवन यात्रा में ही यात्रा समाहित है।

हम मानव जाति का इतिहास पढ़ते हैं। यह पता लगाने की कोशिश करते हैं कि सृष्टि के आरम्भकाल में हम क्या थे, कैसे थे? क्या खाते-पीते थे, क्या पहनते थे, कहाँ और कैसे रहते थे? इसी कोशिश से मानव जाति का इतिहास लिखा गया है। संसार के कई क्षेत्रों में अब भी ऐसी जातियां मिल जाती हैं जो हमारे उन प्रश्नों का किसी-न-किसी अंश में उत्तर देती हैं। वे गोपनीय अंगों को पत्तों आदि से ढकना सीख गई हैं। जो लोग आज सभ्यता की अनेक सीढ़ियां, चढ़ते हुए शिखर पर आ बैठे हैं, समय ने उन्हें भी कभी इसी रूप में रखा होगा। यह कहना अनुचित न होगा कि समय ने ही हमें सभ्यता की उस सीढ़ी पर चढ़ाया है, जहाँ हम यह गर्व करने में समर्थ हुए हैं कि हम जानवर से भिन्न हैं।

जानवर अब भी नंगे रहते हैं और हम सब रोज नए वस्त्र बदलते हैं। जानवर समय द्वारा रचित जंगल की व्यवस्था में सहज रूप में जी लेते हैं। वे न खेती करते हैं, न व्यापार, पर अपना पेट भर लेते हैं। मनुष्य और जानवर में अंतर इतना ही है कि जानवर पेट भरने पर अपनी शिकार का बचा हुआ अंश बिना किसी माया-मोह के, वहीं पड़ा छोड़ कर चला जाता है, जबकि आदमी का पेट अरबों-खरबों की सम्पत्ति से भी नहीं भरता। वह बहुत बड़ा चिंतक तो बन जाता है, किंतु यह नहीं समझ पाता कि समय उसे जन्म से आगे नहीं बढ़ाता। जहाँ तक लाया है, वहाँ से आगे वह कुछ भी नहीं ले जा सकता। समय ऐसा पूर्ण विराम लगाता है कि मनुष्य की सारी शक्तियाँ मिलकर भी उसकी राख तक को साथ नहीं जाने देतीं। आश्चर्य है कि अपनी आँखों से इस सत्य को देखता हुआ भी मनुष्य अपने जीवन के लिए सही मार्ग नहीं चुनता। वह अपने चिंतक स्वरूप को न तो पहचान पाता है और न भौतिकता का ज्ञान कर पाता है।

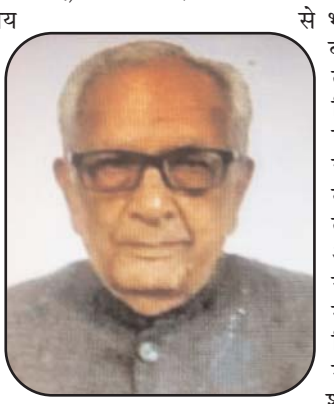

समय ने मानव जाति को आज जहाँ लाकर छोड़ दिया है, वहाँ एक ओर धर्म के खेले हैं और दूसरी ओर विज्ञान के चमत्कार हैं। समुद्रों की गोद में बैठी हुई धरती जिस आकाश से घिरी हुई है उसमें रहस्यों से भरी हुई अनेक नक्षत्रों की अनेक सृष्टियां हैं। वैज्ञानिक आविष्कारों की होड़ में हम केवल धरती की सृष्टि को ही संकट में नहीं डाल रहे, उन नक्षत्र लोकों तक अपनी विनाश लीला पहुंचा रहे हैं, अस्त्र-शस्त्रों का आविष्कार करते हुए हम ऐसी स्पर्धा में फँस गए हैं, जिसका रास्ता केवल सर्वनाश की ओर जाता है। आज यह रास्ता समूची मानव जाति का समय बन चुका है। प्रत्येक देश के जनजीवन को इस भयंकर खतरे ने घेर लिया है। राष्ट्रों में हथियारों की जो स्पर्धा चल रही है, वह गर्व का विषय मानी जा रही है। क्या इससे भी अधिक चिंतनीय कोई अन्य विषय हो सकता है?

विश्व विनाशकारी अस्त्र-शस्त्रों का निर्माण करने पर समय साक्षी है। वे अस्त्र-शस्त्रों का व्यापार भी करते हैं। अपनी-अपनी सैनिक शक्ति का प्रदर्शन करके अपनी हिंसावृत्ति को बढ़-चढ़कर दिखाना उनका लक्ष्य रहता है। वे कहते हैं कि हम जनता को न्याय देने के लिए यह सब कर रहे हैं। समय हँसता है इंसान की ऐसी मूर्खताओं पर । उनके बनाए हथियार आतंकवाद को जन्म देते हैं! राष्ट्रों में परस्पर वैमनस्य के बीज बोते हैं और यों विश्व निरंतर विनाश की समय लीला रचता चला जा रहा है।

यह समय ही तो है कि अपनी सुरक्षा की व्यवस्था में लगे अनेक राष्ट्राधिकारी फांसी के फंदे पर झूल गए। अनेक ऐसे व्यक्ति जो अनाचार-अत्याचार-व्यभिचार को अपना स्वच्छंद अधिकार समझते थे, जेलों में सड़ रहे हैं। वे क्या थे और क्या हो गए।

समय की माँग रहती है कि तुम हजारों वर्ष पहले ही नग्न सभ्यता से संस्कार शील सभ्यता के शुभ फल भोगने के स्वप्न देख रहे हो। उन्हें साकार करना है तो उसकी गति को पहचानो। दुनिया के लिए दहशत और विनाश के जाल मत बनो । तकनीकी समृद्धि का मार्ग अगर विनाश की ओर जाता है, तो उसे बदलो। स्पर्धाएं कहाँ ले जा रही हैं, यह पहचानो। तंत्र जो कुछ रच रहे हैं, उसके अच्छे- बुरे परिणाम जन को सौंप कर समय आगे बढ़ जाता है। जो यह समझ रहे हैं कि उनकी तकनीकी दुनिया के मार्ग में जो विनाशकारी खतरे हैं, वे उनके लिए नहीं हैं, क्योंकि उनके पास अपार धन और साधन हैं, वे भयंकर भ्रम में हैं।

अमेरिका के कई अरबपति अपनी सुरक्षा के लिए हास्यापद व्यवस्था कर रहे हैं। उदाहरणार्थ जमीन के भीतर सुरंगें बिछाकर घरों का निर्माण कुछ लोग कर रहे हैं। समय हंस रहा है। वह रोबोट के अहंकार से भी आगे जा रहा है।

मानव-विकास की आदर्श संस्कृति को बदलकर विनाश की विकृत सभ्यता को समझने का अवसर निकालना चाहिए। उन्हें यह नहीं भुलना चाहिए कि वे जहाँ छिपकर बचना चाहते हैं, वहाँ भी आग है। ज्वालामुखी सो रहे हैं और भूचाल पृथ्वी को हिलाने की इंतजार में है। वे सन्देश दे रहे हैं कि हे मनुष्यों! अपने समय के साथ राक्षसी व्यवहार मत करो। उस जमीन को पहचानो जिसने तुम्हें अपनी गोदी का प्यार दिया है, पाला पोषा और संपन्न बनाया है किन्तु, सुनता कौन है?

मैंने अपने बचपन में दुनिया को विनाश के जिस कगार पर खड़ा देखा था, वह कगार मेरी 94 वर्ष की उम्र में अब भी मौजूद है। प्रथम विश्व युद्ध में शांति की प्रतिज्ञाएं करने वालों ने ही द्वितीय विश्वयुद्ध की नींव डाल दी थी। फिर युद्ध हुआ। नागासाकी और हिरोशिमा भस्मीभूत हुए। फिर विश्व की महाशक्तियों ने ही विश्वशांति की कसमें खाईं और फिर वही विश्व विनाश का महा आयोजन। यह दौर कब रूकेगा? महाशक्तियां समय के साथ खिलवाड़ कर रही हैं। कब तक चलेगा यह खेल? यदि आदमी ने सत्ताओं के मद में आकर इस खेल का समाधान नहीं निकाला, तो उसके परिणामों की भयंकरता का अनुमान लगाना भी असंभव हो जाएगा। केवल ईश्वर विश्वास का ही एक सहारा अवशेष रहेगा।

भारत को विकसित राष्ट्र बनाने में महिलाएं निभाएंगी अग्रणी भूमिका : राष्ट्रपति द्रोपदी मुर्मू

बेणेश्वर में राष्ट्रपति ने लखपति दीदी सम्मेलन में लोन के चैक बांटे

डूंगरपुर (सुजस)। राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मु ने कहा कि प्रकृति के साथ सामंजस्य बनाकर प्रसन्नतापूर्वक कैसे जीवन जिया जाता है यह आदिवासी समाज से सीखा जा सकता है। महिला सशक्तीकरण के क्षेत्र में भी आदिवासी समाज ने देश को दिशा दिखाई है। राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मु 14 फरवरी को असम के राज्यपाल गुलाबचंद कटारिया एवं मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा की गरिमामयी उपस्थिति में डूंगरपुर के बेणेश्वर धाम में आयोजित 'लखपति दीदी सम्मेलन' को संबोधित कर रही थी। राष्ट्रपति ने नारी शक्ति जिंदाबाद, मातृशक्ति जिंदाबाद का नारा लगाते कहा कि महज जिंदाबाद कहने से काम नहीं चलेगा। हमें आगे बढ़ना होगा एवं देश को सशक्त बनाना होगा। यदि महिलाएं बैठी रहेंगी तो देश कैसे चलेगा। आर्थिक-सामाजिक विकास के लिए पुरुष-महिला दोनों को बराबर भागीदार बनना होगा।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने देशभर में 3 करोड़ महिलाओं को लखपति दीदी बनाने का संकल्प लिया है। उनके संकल्प को साकार करने की दिशा में राज्य सरकार ने प्रदेश की 11 लाख 27 हजार महिलाओं को अगले तीन वर्षों में चरणबद्ध रूप से लखपति दीदी बनाने का लक्ष्य तय किया है। अभी तक 2.80 लाख महिलाएं लखपति दीदी की श्रेणी में आ भी चुकी हैं।

राजस्थान ग्रामीण आजीविका विकास परिषद (राजीविका) के तत्वावधान में हुए इस सम्मेलन में राजीविका से संबद्ध महिला स्वयं सहायता समूहों को बैंकों से 250 करोड़ रुपए की ऋण राशि तथा महिला निधि के तहत 50 करोड़ की राशि के चैक वितरित किए गए। राज्य में राजीविका मिशन द्वारा तीन लाख 81 हजार स्वयं सहायता समूह के माध्यम से 46 लाख महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाया गया है।

इस दौरान राष्ट्रपति तथा मुख्यमंत्री ने स्वयं सहायता समूहों से संबंधित प्रदर्शनी का अवलोकन कर उनसे जुड़ी महिला उद्यमियों से संवाद किया। इससे पूर्व राष्ट्रपति ने बेणेश्वर धाम स्थित श्री हरि मंदिर में दर्शन कर पूजा अर्चना की। वनवासी कल्याण आश्रम के राष्ट्रीय अध्यक्ष रामचन्द्र खराड़ी एवं महन्त अच्युतानंद महाराज ने मंदिर में पूजा करवाई। इसके बाद उन्होंने संत मावजी महाराज के संग्रहालय का भी अवलोकन तथा वाल्मीकि मंदिर में दर्शन कर पूजा अर्चना की।

क़मर मेवाड़ी के नाम साहित्यकारों के पत्र (2)

शब्द रंजन के 01 जनवरी 2024 के अंक में आप पढ़ चुके हैं, क़मर मेवाड़ी के नाम नन्द चतुर्वेदी के 10 पत्र। यहां पढ़िये अन्य साहित्यकारों के पत्र –

(1)

विष्णु प्रभाकर का दिनांक 11 दिसंबर 2007 का पत्र –

प्रिय भाई, प्रीतमपुरा, दिल्ली-110034

आशा करता हूं आप स्वस्थ और प्रसन्न हैं। 'सम्बोधन' पत्रिका का संस्मरण अंक 2007 मिला। कितनी सामग्री संकलित हुई है इसमें कि पढ़ने में अभी कुछ समय लगेगा लेकिन प्रथम दृष्टि में यह अंक बहुत सुन्दर बन पड़ा है। कितना कुछ देख गया हूं वो सब प्रथम श्रेणी का है। मेरी हार्दिक बधाई स्वीकार कीजिये इस सुन्दर अंक के सम्पादन के लिए। शेष शुभ। हार्दिक शुभकामनाओं के साथ-

स्नेही
विष्णु प्रभाकर

(2)

आलमशाह खान का दिनांक 24 जून 1982 का यह पत्र –

म्हारा वाला मेवाड़ी लाल भूपालवाड़ी, उदयपुर

नेह पाती खातर घणो चाव। आप दीतवार ने उदैपुर पधारसी पण मूं उण रोज परबात नौ वज्यां सूं लेर संझा छह बज्यां तांई कॉलेज में ड्यूटी माथै तैनात हूं सो भलो वे के आप सोमवार ने पधारौ। सगळो काम-धाम आप रै अठै पधारवां पर ही पार लागेगा। टाबरां ने आसीस बंचावची।

घणां नेह
आलमशाह खान

(3)

अरूण कमल का दिनांक 20 सितम्बर 1983 का यह पत्र –

प्रिय मेवाड़ीजी पटना-800004

नमस्कार,

सम्बोधन का अंक मिला। पत्र भी। आपने सम्बोधन में मेरी पुस्तक पर समीक्षा छापी, उसके लिए हार्दिक धन्यवाद। मैं आपका आभारी हूं कि आपने बिना मेरे अनुरोध के स्वत: ही समीक्षा प्रकाशित की। आजकल तो कहने पर भी लोग ध्यान नहीं देते। आप कृपया समीक्षक श्री राजेन्द्रसिंहजी को भी मेरा धन्यवाद प्रेषित कर देंगे।

आप यह न समझें कि मैंने उस समीक्षा का बुरा माना है। पता नहीं, भारतीजी ने आपको क्या लिखा परन्तु मैं जरा भी विचलित नहीं हुआ बल्कि मुझे खुशी हुई कि मुंहबोली लिखने से अच्छा है कि जो हम ठीक समझें वह लिखें। राजेन्द्रजी को जो उचित लगा वह उन्होंने लिखा। यह ठीक ही है- खेलत में को काको गुसैयो? आप मेरी ओर से निश्चित रहें। मैंने सचमुच बुरा नहीं माना। कविताएं तुरंत भेज रहा हूं- तीन या चार? कविता में समकालीन कविता पर लेख भी दें तो अंक की उपयोगिता बढ़ेगी। शुभकामनाओं सहित-

आपका
अरूण कमल

(4)

अभिनव ओझा का दिनांक 09 मई 2005 का यह पत्र –

कमरजी,

नमस्ते।

अप्रेल-जून 2005 का 'सम्बोधन' मिला। आभार और धन्यवाद स्वीकार करें। 'आदमी में एक नुक्स है' (स्वयंप्रकाश) नायाब चीज है। स्वयंप्रकाशजी से निरन्तर नई और अच्छी बातें जानने को मिलती हैं। यादवेन्द्र शर्माजी का संस्मरण अभिभूत कर देने वाला है। शर्माजी सही अर्थों में कर्मठ मसिजीवी हैं।

एक और खुद्दार, ईमानदार और स्पष्टवादी रचनाकार हैं मेरे अग्रज स्वामी वाहिद काज़मी। स्वामीजी का अविराम स्नेह मुझे मिलता रहा है। 'रेत से भी भुरभुरा है दोस्तों जिसका ज़मीर' उन्होंने डूबकर लिखा है। भाषा पर उनकी असाधारण पकड़ और महीन शल्य-क्रिया की उनकी बेजोड़ क्षमता लेख को अविस्मरणीय बनाने में सफल है। उन्होंने अपने समानधर्मी का पक्ष लिया है, फिर भी मैं उनका कृतज्ञ हूं, शुक्रगुजार हूं।

डॉ. हुसैनी बोहरा की लेखनी मंजी हुई है। बढ़िया समीक्षक हैं बोहरा साहब। और विजय साहब का तो कहना ही क्या। इन्दौर शहर पर उनका आलेख हॉन्ट करने वाली चीज है। 'सम्बोधन' कुल मिलाकर कायदे की पत्रिका है, स्तरीय तथा पक्षपात रहित है। क़मरजी मेरी बधाई स्वीकार करें।

आपका
अभिनव ओझा

(5)

डॉ. नवलकिशोर का दिनांक 03 जुलाई 1995 का यह पत्र –

भाई क़मर, उदयपुर-313001

पुस्तकें मिली, पत्र भी। दोनों पढ़ ली हैं। शायद मैं पहला समीक्षक-पाठक हूं जो पुस्तकें पढ़कर बहुत प्रसन्न हुआ हो। मुझे ताज्जुब हुआ था, खान से ज्यादा डर था पर उसने मेरी भावना और समीक्षा को सही रूप में लिया। अक्सर लोग गांठ बांध लेते हैं- अगर समीक्षा शुद्ध प्रशंसात्मक न हो तो। दोनों लोग तुम्हारे दोस्त हैं, अत: सोचकर लिखो कि मैं समीक्षा लिखूं या नहीं।

मुझसे तो खफा हो भी सकते हैं, तुझसे भी हो सकते हैं। राजेन्द्र यादव जैसा नामी लेखक-सम्पादक भी जो मेरे जैसे अदना समीक्षक से गांठ बांध ले तो और लोगों से भी वैसी सम्भावना हो सकती है।

आपका
नवलकिशोर

(6)

अनवर सुहैल के पत्र –

03 सितम्बर 1998, सीधी (म. प्र.) 486890

मोहतरम क़मर मेवाड़ी सा.

सम्बोधन 32/3 और 32/4 प्राप्त। आलमशाह खान की आत्म-प्रस्तुति 'पीड़ा के पिरामिड' ने बेहद असर डाला। बाप के आतंक का रूप कैसे सत्ता/ व्यवस्था के आतंक का रूपक बना और मज़लूम मां का रूप कैसे इस मदहोश की रिआया की उपमा, सचमुच आतंकित हुआ मन.... देर तक असर बना रहा।

स्वयं प्रकाश ने पुरस्कार की संस्कृति और लालायित हिन्दी लेखक समुदाय के बैराग पर अच्छी टिप्पणी की है। 'चन्दन विष व्यापत नहीं'

हिंदी के महत्त्वपूर्ण कवि मधुसूदन पाण्ड्या की काव्य पुस्तक 'मोहपाश में बंधी भीड़' का लोकार्पण करते कवि नंद चतुर्वेदी और समारोह के सहभागी लोककला के विद्वान डॉ. महेन्द्र भानावत, ओंकारश्री, क़मर मेवाड़ी, कथाकार माधव नागदा, युवा गीतकार और समीक्षक त्रिलोकीमोहन पुरोहित।

के बहाने मार्क्सवादी चिन्तक, कवि विष्णुचन्द्र शर्मा का अब्दुर्रहीम खानखाना का स्मृति आलेख, हिन्दी भाषा के लिए एक अभिनव प्रयोग है।

अनिल गंगल की कविता 'ताकतवर आदमी का हाथ' और गोविन्द माथुर की 'अक्सर हम भूल जाते हैं' अच्छी लगीं। 'सम्बोधन' के एक अंक का दो खण्ड में आना अच्छा लगा। आपके पचासवें वर्ष के पहले अंक की प्रतीक्षा में। शुभाकांक्षी

आपका
अनवर सुहैल

(7)

सरगुजा (म. प्र.) 493442, 16 फरवरी 2000

आदरणीय क़मर मेवाड़ी सा.

सामने स्व. मनमोहन ठाकौर साहब का 25-06-1998 का एक खत है जिसमें की चंद लाइनें आप पर हैं-

'भाई, उदयपुर में वक्त अच्छा बीता। वहां मेरे पचास साल पुराने दोस्त नन्द चतुर्वेदी रहते हैं। उनके साथ मैंने 1948 में हाड़ौती प्रगतिशील लेखक संघ की स्थापना की थी। तेरह-चौदह कोटा, बूंदी, झलावाड़ के कवियों-लेखकों की जमात उस इलाके के गांव-कस्बों में कविता सुनाते फिरते थे। वे तमाम यादें ताजा हो आईं। अब तो नन्द राजस्थान के

सुप्रसिद्ध कथाकार माधव नागदा के कथा संग्रह 'अकाल और खुशबू' का लोकार्पण हिंदी के विख्यात कथाकार डॉ. आलमशाह खान के कर कमलों से सम्पन्न हुआ। मंच पर प्रसिद्ध कवयित्री प्रीता भार्गव, मधुसूदन पाण्ड्या, डॉ. आलमशाह शान, माधव नागदा, डॉ. सदाशिव श्रोत्रिय और कृति चर्चा करते क़मर मेवाड़ी

विशिष्ट कवियों में अन्यतम हो गये हैं। उन्होंने ही कांकरोली के 'सम्बोधन' सम्पादक क़मर मेवाड़ी और उदयपुर के कई दूसरे लेखकों से मुलाकात मुमकिन करवा दी।

क़मर मेवाड़ी भाई ने कांकरोली में आने का निमंत्रण दिया। वहां 14 जून को खासी लम्बी गोष्ठी चली जिसमें मैंने कविताएं और एक अप्रकाशित संस्मरण पढ़ा। वहां के कवियों ने भी खूब सुनाया। मजा आया। क़मर भाई ने संस्मरण सम्बोधन के लिए जब्त कर लिया।' - पत्रांश

खत लिखने की वजह है आपसे स्व. ठाकौर सा. पर संस्मरण लिखवाना। 'असुविधा' का नया अंक स्व. ठाकौर सा. की स्मृति पर निकाला जा रहा है। आप से अनुरोध है कि शीघ्र उनको श्रद्धा सुमन अर्पित करती चंद पंक्तियां, आलेख, संस्मरण लिख भेजें। स्व. ठाकौर नवलेखकों के मुहाफिज थे। मेरे बुजुर्ग और पथप्रदर्शक थे। आपसे उम्मीद है, 'असुविधा' के लिए आलेख अवश्य भेजेंगे।

सादर
अनवर सुहैल

(8)

कोरिया (म. प्र.) 20 अगस्त 2000

आदरणीय क़मर मेवाड़ी साहब,

आदाब

आपका रजिस्टर्ड पत्र, संस्मरण, फोटोग्राफ्स प्राप्त, आभार। अब मैं 'असुविधा' के इस अंक के लिए आश्वस्त हूं। मैं चाहता था कि अंक 15 अगस्त 2000 (स्व. ठाकौर सा. की प्रथम पुण्यतिथि) को रीलिज हो जाये। अब भी समय नहीं गुजरा है। दो-तीन महत्त्वपूर्ण आलेख भी आजकल में आ जायेंगे। आपको मालूम हो कि वरिष्ठ कवि श्रीयुत नन्द चतुर्वेदीजी ने अपनी कांपती हस्तलिपि में एक लम्बा संस्मरण लिख भेजा है। ठाकौर साहब को आपने वाकई आत्मीयता से याद किया है। आपको मालूम हो कि उदयपुर प्रवास (1998) से लौटकर ठाकौर साहब बेहद खुश थे। उनका वह पत्र मैं 'असुविधा' में छापूंगा। दिल्ली की भाड़ में ठाकौर सा. को समझ सके हैं सिर्फ श्री विष्णुचन्द्र शर्मा। आपको यह आलेख लिख भेजने का सद् शुक्रिया। दुआओं में जगह दें।

आपका ही
अनवर सुहैल

(9)

ओंकारश्री के लिखे पत्र –

02 फरवरी 1996, जयपुर-302020

क़मर भाई,

बांये पांव में चोट आई। आगमन की विवशता वेदनीय है। फिर मिलेंगे। प्रसन्न रहना।

सदा सा
ओंकारश्री

(10)

11 जनवरी 1996, जयपुर-302020

क़मर भाई,

तुम्हारा पत्र। हार्दिक प्रसन्नता। मेरी संघर्ष-यात्रा जो रूकेगी नहीं। शब्द विनिमय तो करना ही होता है। शब्द बेचना आपराधिक कृत्य मानता हूं। इस देश में मुक्त लेखन कष्टप्रद तो है ही। मुझे लेखनी का जो वर मिला है, यह अदृश्य की अनन्त कृपा ही है। 63वें में चल रहा हूं। कांकरोली का पर्याय है 'सम्बोधन' और 'सम्बोधन' का सम्बोधन है कर्मठ कलमधनी 'क़मर'। मेरे प्रति जो सम्मान भाव तुम्हारे अंतस्तल में है वह किसी समारोहीय सम्मान आयोजन से बड़ा है।

मेरी पोथी 'राजस्थानी जनकवि : अवधारणा' को समीक्षार्थ राजस्थान अकादमी से मंगवाओ। इस कृति ने मुझे पर्याप्त प्रतिष्ठा प्रदान की है। पुरस्कार तो दंदफंद का खेल है। उससे मैं परे हूं। व्यक्ति का नहीं, सम्मान तो कृति का होना ही सुसंगत लगता है।

तुम्हारा भाई
ओंकारश्री

(11)

24 दिसम्बर 2007, उदयपुर-313002

क़मर भाई,

रिधो सिधो कलमां बधो।

04 महीने बीमार रहा, पिछले दिनों 10.12.07 को लाली बिटिया के पति व मेरे कानपुर (यू. पी.) वाले जंवाईसा श्री विनोदजी पारीक का निधन केंसर रोग से हो गया। कानपुर से लौटने के बाद डॉ. महेन्द्र भानावत से सुना कि 'सम्बोधन' का वृहद संस्मरणात्मक अंक निकला है। वियोग वेला में यह संवाद सुखद रहा।

मुझे खेद है कि 'एक पंख आकाश' को बरसों पूर्व उजागर कर हिन्दी मिनि काव्यजगत में तहलका मचाने वाले क़मर मेवाड़ी ने अपने सखा ओंकार को एकदम बिसरा दिया। क्या नाराजगी है? महर कर 'संस्मरणांक' लेकर मुझसे फौरन मिलो, यह बड़े भाई का स्नेहादेश है। तुम्हारी भाभी तुम्हें याद करती है।

मुझे खुशी होती संस्मरणांक में विरल संस्मरण भेजता तो आपके लिए मैं 'ना-लायक'- रहा। मैं 75 बरस का, कलम की जवानी थामे सतत् सृजनरत हूं। मित्र-धन ही तो मेरी सम्पदा है। मिलनातुर

बन्धु सखा

तुम्हारा
ओंकारश्री

(12)

11 जून 2008, उदयपुर-313002

क़मर भाई,

खुश रहो अहलेवतन।

'बाबो आयो न बाटियां लायो।' तुम्हारे आगमन की प्रतीक्षा है। अम्बाला छावनी वाले स्वामी वाहिद काज़मीजी से लम्बे समय से पत्राचार सध रहा है। उन्होंने बीकानेर की तीन फिल्मी हस्तियों के पहले लेख भेजे। मैंने इन तीनों को, 'युगपक्ष' बीकानेर में मेरे 'हैलो बीकानेर' स्तम्भ में कवर कर उन्हें छाया प्रतियां लेखों की भेजी।

गत 9-6 को उन्होंने मेरे आग्रह पर अपने जीवनपरक लेख भेजे, स्वयं के लिखे कई लेख भी। कुल 16 आलेख। 72 पृष्ठ की सामग्री के साथ में सुरैया अंक 'संगीत' पत्र हाथरस का भी भेजा। यह अंक काज़मी के लेखों वाला, अच्छा लगा। इनकी मंशा है कि मुझ पर लिखें लेख सम्बोधन के लिए। तुम आओ। सामग्री देखो। फिर कहेंगे उस पर सम्बोधन - हेतु लिखूंगा। एक पूरा अंक वाहिद पर निकले- इतनी सामग्री है। 75 वर्ष पूरे हुए उम्र के मेरे। समारोहधर्मी-आत्मप्रचारक हूं नहीं। फिर - अमृत पर्व! ना बाबा ना। मेरा सम्मान तो हिन्दी संसार में व्यापक रूप से सम्बोधन मंच से हो गया। ऐसा सम्मान। एक कीर्तिमान। 'एक पंख आकाश' श्रेय तुम्हारा। किडनी और अस्थमा रोगों से आक्रांत काया जर्जर पर कलम नहीं।

लिखना है और टिकना है

किसी कीमत पर नहीं बिकना है।

शब्द सम्मान सर्वोपरि। परिवार मंगल भाव सहित। तुम्हारे आगमन की बाट जोहता-

भाई तुम्हारा
ओंकारश्री

स्मृतियों के शिखर (179) : डॉ. महेन्द्र भानावत

संथारा : जीवन के अंतिम काल की उत्कृष्टतम मरणधर्मा साधना

किसी भी जीवधारी के लिए जन्म और मृत्यु दो छोर हैं। इनमें जन्म पर कोई बवाल नहीं पर मृत्यु को लेकर कई तरह की मान्यताएं, धारणाएं और सिद्धान्त हैं। इस पर कोई एकमत नहीं है बल्कि गूढ़ चिंतन तथा सोच-विचार के बाद भी इसके रहस्यतल तक कोई नहीं पहुंच पाया। सच ही है, मृत्यु के बाद जीव की क्या दशा, दिशा और गति-मति होती है, इसे कोई नहीं जान पाया। ज्ञानियों, गुणीजनों ने अपने-अपने ढंग-रंग से मृत्यु को व्याख्यायित किया लेकिन पूर्वजन्म और पुनर्जन्म का विश्वासी लोकमन कर्मानुसार फल भोगने की आत्मचेतना को महत्त्व देकर वर्तमान जीवन में अच्छे कार्य करने को महत्त्व दिये रहता है और उस आधार पर यह मान्यता है कि मनुष्य का जन्म भी सफल, सार्थक तथा सद्गति लिए हो। इस दृष्टि से जैनलोक अधिक सक्रिय, सचेत तथा संज्ञानी लगता है।

कई लोग जीतेजी सुकृत्य नहीं कर पाते हैं किन्तु अंतिम अवस्था में, मरणासन्न स्थिति में अपने को बदलते हुए अच्छी भावना वाले बन जाते हैं। अपने द्वारा जो कुछ अ-ठीक कार्य हुए हों, उनकी चिंतना कर पापकर्म का प्रायश्चित करते मिलते हैं और निर्मल भावों से, समता दृष्टि रखते हुए मृत्यु का वरण करते हैं। मृत्यु पूर्व ऐसे मंगल-मरण की कामना व्यक्ति स्वयं तो करता ही है मगर अन्य परिजन भी उसकी मंगल-मृत्यु के लिए नानाप्रकार के धर्माचरणीय कर्म करने का निर्वाह करते हैं।

कई लोग जीतेजी सुकृत्य नहीं कर पाते हैं किन्तु अंतिम अवस्था में, मरणासन्न स्थिति में अपने को बदलते हुए अच्छी भावना वाले बन जाते हैं। अपने द्वारा जो कुछ अ-ठीक कार्य हुए हों, उनकी चिंतना कर पापकर्म का प्रायश्चित करते मिलते हैं और निर्मल भावों से, समता दृष्टि रखते हुए मृत्यु का वरण करते हैं। मृत्यु पूर्व ऐसे मंगल-मरण की कामना व्यक्ति स्वयं तो करता ही है मगर अन्य परिजन भी उसकी मंगल-मृत्यु के लिए नानाप्रकार के धर्माचरणीय कर्म करने का निर्वाह करते हैं। ऐसी स्थिति में व्यक्ति को कई प्रकार के गीत, भजन, तवन, थोकड़े, ढालें, चिंतारणियें, चौक, कथा-कथन, वचन, ब्यावले, तुकें आदि सुनाई जाती हैं। इसी लक्ष्य को ध्यान में रखकर कई बार मरणासन्न व्यक्ति को संथारा तक करा दिया जाता है। संथारा उन्हीं को दिया-दिलाया जाता है जो मृत्यु के अति निकट पहुंचे लगते हैं। इसमें अन्न, जल, दवाई आदि सबका परित्याग किया जाता है। ऐसे संथारा लिए व्यक्ति की मौत अच्छी मौत कही जाती है। संथारा साधु-साध्वियों, श्रावक-श्राविकाओं को ही नहीं, गृह-पशुओं तक को असाध्य बीमारी की मरणासन्न स्थिति में पछखाया जाता है। जिस प्रकार सभी वंशों में तीर्थंकर वंश, कुलों में श्रावक कुल, गतियों में सिद्ध गति, सुखों में मुक्ति सुख, धर्मों में अहिंसा धर्म, मानवीय वचनों में साधु वचन, श्रुतियों में जिन वचन और शुद्धियों में सम्यक् दर्शन उत्तम है, उसी प्रकार समस्त साधनाओं में समाधि-मरण उत्तम है।

ऐसी स्थिति में जीवन की अंतिम करवट लिए व्यक्ति को कई प्रकार के गीत, भजन, तवन, थोकड़े, ढालें, चिंतारणियें, चौक, कथा-कथन, वचन, ब्यावले, तुकें आदि सुनाई जाती हैं ताकि उसका मन सांसारिकता से विरक्त हो आत्म-कल्याणक विचार-बोध में रमण कर सके। इन श्रवणों में बैरी बुढ़ापे को खूब कोसा जाता है और जीवन में किये गये अठीक कार्यों की चिन्तारणा की जाती है तथा गलतियों पर गालें एवं धिक्कारणाएं दी जाती हैं ताकि मरणासन्न व्यक्ति शुद्ध भावों का वरण कर सके। रत्न, चिंतामणि तथा हेम से मूल्यवान जीवन की करणी पर आत्मालोचन करते हुए जीव अब और अधिक जीवित नहीं रहकर शीघ्र ही सुगति एवं परमपद पाने की वांछा कर सके।

इसी लक्ष्य को ध्यान में रखकर कई बार मरणासन्न व्यक्ति को संथारा तक करा दिया जाता है। इस अवसर पर के गीत संथारा गीत कहे जाते हैं जो समूह रूप में गाकर सुनाये जाते हैं। संथारा उन्हीं को दिया-दिलाया जाता है जो मृत्यु के अति निकट पहुंचे लगते हैं। इसमें अन्न, जल, दवाई आदि सबका परित्याग किया जाता है। ऐसे संथारा लिए व्यक्ति की मौत अच्छी मौत कही जाती है जो भाग्यशालियों को ही नसीब होती है। संथारा साधु-साध्वियों, श्रावक-श्राविकाओं को ही नहीं, गृह-पशुओं तक को असाध्य बीमारी की मरणासन्न स्थिति में पछखाया जाता है।

पंथीड़ा गीत में मरणासन्न व्यक्ति को मृत्यु उपरान्त की वस्तुस्थिति का ज्ञान करा सांसारिक पिंजड़बंदी से मुक्त होने की सीखावना दी गई है। यह ऐसी अवस्था होती है जब व्यक्ति कुछ भी कर्म करने की सामर्थ्य नहीं रखता है किन्तु यदि उसने ठीक से सुन भी लिया तब भी वह अपनी भावशुद्धि तो कर ही सकता है ।

काच सूना म्हेलां ऊपर, सूतो खूंटी ताण रा
सान्या में थारे कोई न समझे, आण रोक्यो कंठ रा
म्हारा पंथीड़ा मत पड़ पिंजर, सेंसार मार्‌या जाय जी।
धंधो करी ने धन्न जोड्‌यो, लाखां ऊपर क्रोड़ रा
मरती वेरां मानवी थारो, लियो कंदोरो तोड़ रा म्हारा....
कोरो बिस्तर घरे लाया, थाणे लियो ओड़ाय रा
फूटी हांडी लारां लीधी, उठ चल्या लीलधार रा म्हारा....
माता थारी सदाई झूरै बैन वार तेवार रा
घर की तिरिया नैन झूरै, कोई नी राखणहार रा म्हारा....

भावार्थ - वह कांच जिसमें तू बार-बार अपना मुख-मंडल निहारा करता, सूना पड़ा है और तू खूंटी तान सो रहा है। तेरे इशारे को कोई नहीं समझ रहा है। बोलती बंद हो गयी है। मेरे पंथी! संसार-चक्र में मत पड़। बुरी तरह मारा जायेगा। जीवन भर धंधा कर-कर धन जोड़ा। लाखों-करोड़ों कमाये लेकिन मरते समय तुम्हारी कमर का कंदोरा तक तोड़ दिया। कोरा बिस्तर घर लाया। ऊपर तुम्हें सुलाया। फूंटी हंडिया साथ ली और तुम्हें विदाई दी। तुम्हारी माता सदैव रोती रही। बहिन वार त्यौहार रोई। गृह लक्ष्मी भी रोई पर कोई भी तुम्हें रखने वाला नहीं।

यही नहीं, मृत्युशैय्या पर पड़े व्यक्ति को गर्भ चिंतारणियां भी सुनाई जाती हैं। गर्भावस्था की याद में जो गीत-कथाख्यान प्रचलित हैं, उन्हें गर्भ चिंतारणियां कहते हैं। इनमें गर्भस्थ शिशु की चिंतना के साथ-साथ मनुष्य-जीवन को सहिष्णु और समतावान बनाने की सीख रहती है। ये गर्भवती महिलाओं को भी सुनाई जाती हैं ताकि गर्भ में पल रहा शिशु जीवयोनि के स्वरूप, कर्मफल, सांसारिक मोहजाल, रोग, भोग तथा सुख-दु:ख का सम्यक् ज्ञान प्राप्त कर जन्म धारण करे और अपने जीवन को सार्थक करता हुआ मंगल-मरण का वरण करे। इस दृष्टि से ये गर्भ चिंतारणियां जीवयोनि का गूढ़ दर्शन लिये होती हैं। मरणासन्न व्यक्ति को ये चिंतारणियां इसलिए सुनाई जाती हैं ताकि वह अपने को सांसारिक मोह ममता से मुक्त कर आनंद से देह त्याग आत्मलीन हो सके।

थोकड़ों में आत्मा को संबोधित कर बार-बार यह चेतना दी जाती है कि मनुष्य संभले और सत्मार्ग का, सत्संगत का अनुसरण करे। यही नहीं, बार-बार आत्मचिंतन के लिए प्रेरणा दी जाती है और गलत किये कार्यों के प्रति प्रायश्चित करने और क्षमायाचना करने की भावना भरी जाती है । गलत कार्य करना ही नहीं, किसी से गलत वचन नहीं कहना और न मन से गलत कार्य करने की सोचना। यही नहीं, ऐसा कार्य करना ही नहीं, किसी अन्य से करवाना भी नहीं और न किसी करते हुए का अनुमोदन करना। इन सब में उसे पाप-कर्म का भागी बनना पड़ता है।

पराई नारी के प्रति गलत भावना नहीं रखना। आचार-विचार को शुद्ध रखना। स्वस्थ तन, स्वस्थ मन रखना। सभी प्रकार के कुव्यसनों से दूर रहना। समुद्र की लहरों पर लहरें आयें, उस तरह की महत्वकांक्षाएँ नहीं पालना। अपनी सीमा में रहना। संयममय जीवन और अनुशासन की डोर में बंधकर जीवन यापन करना। क्रोध, मान, माया लोभ से बचना। इस प्रकार जीवन व्यतीत करना जिससे आत्मा परम प्रसन्न रहे। मन स्वस्थ रहे। इसका अभ्यास जीव को प्रारंभ से हो तभी जाकर वह सुसंस्कारी बनेगा। इसलिए बार-बार आत्मचेतना की ओर व्यक्ति का ध्यान केन्द्रित किया जाता है ताकि वह शुद्ध बना रहे और सांसारिक ऊहापोह और गुत्थमगुत्थी से बचा रह सके।

चौकों में कर्म-फल का माहात्म्य बताने के साथ-साथ विषय-वासना, मोह-माया, जाल-व्याल से दूर रह स्वस्थ जीवन जीने की सीख एवं भलावण मिलती है। चौकों में कर्म के प्रति व्यक्ति का अधिक ध्यान केन्द्रित हुआ रहता है। नर को अच्छा-बुरा बनाने वाले उसके कार्य हैं। यदि वह अच्छे कर्म करेगा तो अच्छा बना रहेगा। इसलिए मनुष्य कार्यों का दास न बने। यदि वह कर्म का दास बन गया तो कर्म उसे बुरी तरह घेर लेंगे और नानाप्रकार से उसे नचाते रहेंगे। कर्म के वशीभूत हो जाने पर व्यक्ति बेबस हो जाता है फिर उसी के अंधानुकरण में फंसा रहता है और अपना जीवन बर्बाद कर देता है। इसलिए व्यक्ति कर्मों के कुचक्र में न फंसे और न उसका दास बने अन्यथा उसका यह जीवन तो व्यर्थ होगा ही, अगला जीवन भी भटकन भरा रहेगा।

जैन ग्रन्थों में मृत्यु को लेकर बड़ा विशद वर्णन मिलता है। मृत्यु का सामान्य अर्थ देह मुक्त होना है। जिसको अपने जीवन के प्रति आसक्ति है, जो विषय भोगों में लिप्त रहता है, मृत्यु से डरता है अथवा मरना नहीं चाहता लेकिन उसकी चाह चलती नहीं और मरने को मजबूर होना पड़ता है। दूसरी ओर जो मृत्यु को हंसी-खुशी वरण करता है, मृत्यु से भयभीत नहीं रहता है और जीवन के प्रति आसक्ति भी नहीं होती। अत: मोटे रूप में मृत्यु के दो भेद- अकाल मृत्यु और सकाल मृत्यु होते हैं। अकाल मृत्यु अज्ञानी, अबोध और नासमझों की होती है। विवेकवान और ज्ञानी सकाल मृत्यु स्वीकारते हैं। अकाल मृत्यु को बाल मरण और सकाल मृत्यु को पंडित मरण भी कहा जाता है।

स्थानांग सूत्र में मृत्यु के अप्रशस्त और प्रशस्त नामक दो भेदों का उल्लेख करते हुए अप्रशस्त मरण के सत्रह भेद बताये हैं जबकि भगवती आराधना में सत्रह भेदों का उल्लेख मिलता है।

संथारे का शाब्दिक अर्थ शय्या से है। इसमें जीवन शय्या से मुक्त हो मृत्यु-शय्या का वरण करना होता है। संथारा समभावपूर्वक विवेक रीति से देह का विसर्जन करना है। मोटे रूप में ये कारण बनते हैं-

(अ) अकाल, महामारी, दुर्भिक्ष आदि की चपेट में आना।
(ब) बुढ़ापे से बुरी कदर जीवन-यापन से तंग होना।
(स) असाध्य बीमारी के रहते कष्टप्रद जीवन से मुक्ति पाना।
(द) प्राणघातक बीमारी से आक्रांत होना।
(य) आपातकालीन संकट से बचने की उम्मीद नहीं रखना।

जैन आगमों तथा अन्यान्य ग्रन्थों में संलेखना के प्रकार और प्रक्रिया विविध रूपों में वर्णित है। संलेखना के तीन प्रकार में जघन्य, मध्यम एवं उत्कृष्ट संलेखना क्रमश: 6 माह, एक वर्ष एवं बारह वर्ष की होती है।

जैन धर्म के प्रभावक आचार्य महाप्रज्ञ की दृष्टि में संथारा तपस्या का विशिष्ट प्रयोग है। यह किसी परम्परा का निर्वाह भी नहीं है। आत्महत्या भी नहीं है और न ही सती प्रथा ही है जैसा कि कुछ लोग कहते पाये गये हैं। भिवानी में अपने व्याख्यान में संथारे का उद्देश्य स्पष्ट करते हुए उन्होंने कहा- जो व्यक्ति अच्छा जीवन जीता है, वह तपस्या के अनेक प्रयोग करता है। जब उसे लगे कि शरीर उत्तर दे रहा है तब वह अपना अन्तिम समय तपस्या के विशिष्ट प्रयोग के साथ समाधिपूर्वक बिताता है।

उनकी दृष्टि में संथारे का एक नियम है- न जीने की इच्छा करना और न ही मरने की इच्छा करना यानी समभाव में रहना। जब व्यक्ति का शरीर इतना क्षीण हो जाय कि वह कुछ भी करने की स्थिति में न रहे तो उस मरणासन्न स्थिति में वह अपने शरीर के प्रति सर्वथा अनासक्त बन जाय। संथारा या अनशन इसी आसक्ति को छोड़ने का एक विशिष्ट प्रयोग है। आचार्यश्री ने कहा कि किसी भी प्रथा के साथ अनिवार्यता की बात जुड़ी होती है जबकि संथारे के साथ कोई भी अनिवार्यता नहीं है। यही कारण है कि लाखों-करोड़ों में से कभीकभाक दो-चार व्यक्ति इस प्रकार की साधना का प्रयोग करते हैं।

राजस्थान हाईकोर्ट के पूर्व न्यायाधीश पानाचन्द जैन ने भगवती सूत्र का हवाला देते हुए लिखा कि जिस मरण में विषय भावनाओं की प्रबलता हो, कषाय की आग धधक कर सुलग रही हो, वह विवेकपूर्ण मरण है। संथारा पंडित मरण है।

इसे समाधिमरण भी कहते हैं। संथारा ग्रहण करने से पूर्व साधक संलेखना करता है। संलेखना के पश्चात संथारा किया जाता है। इसमें अधिक निर्मलता और विशुद्धता होती है। संथारा का अभिप्राय है आसन बिछाना। तब साधक विधिपूर्वक पूर्व दिशा की ओर मुंह कर मारणान्तिक संलेखना व आराधना करता है। 'संथारा' प्राकृत भाषा का शब्द है। संस्कृत शब्द 'संस्तार' है। संलेखना; सत् और लेखना इन दोनों के संयोग से बना है। सत् का अर्थ सम्यक् और लेखना का अर्थ कृश करना। सम्यक् प्रकार से कृश करना। संलेखना में शरीर व कषाय को साधक इतना कृश कर देता है कि उसके अन्तर्मानस में किसी भी प्रकार की कामना नहीं रहती।

श्री जैन की राय में जीने के अधिकार के साथ मृत्यु को आलिंगन करने का अधिकार भी मानना चाहिये। जहां कोई व्यक्ति इस लोक में आनन्द लेने के बाद परलोक हेतु स्वेच्छा से मृत्यु को आलिंगन करना चाहता हो अथवा जहां मृत्यु निश्चित रूप से होने वाली हो वहां व्यक्ति द्वारा उपकरणों को हटाने व दवा लेने अथवा अन्न-जल छोड़कर मृत्यु के आलिंगन करने को ही इच्छा-मृत्यु, संथारा, संलेखना तथा प्रायोपवेशन, प्रायोपगमन अथवा समाधिमरण माना गया है जो कभी आत्महत्या नहीं माना जा सकता। थोड़े काल के लिये किया जाने वाला संथारा सागारी संथारा कहलाता है जबकि आयुष्य निकट आया समझकर साधु-साध्वी या श्रावक-श्राविका की साक्षी से किया जाने वाला संथारा जावजीव संथारा कहा जाता है। इसे चरम पछक्खाण भी कहते हैं। एक संथारा गीत में कहा गया है-

संथारो प्यारो घणो रतन चिंतामणि है,
हो भविजन पंचमी गति पोंचाय।
आर पाणी आदरे नहीं, सब जीवां रा छे रवमाय,
हो भविजन पंचमी गति पोंचाय।
करोनी शुभ आलोचणा, लगावो मुगत्यां सूं ध्यान,
हो भविजन पंचमी गति पोंचाय।
ऐसी सदा हो मुझ में वीरता, होवे तरत कल्याण,
हो भविजन पंचमी गति पोंचाय।

तात्पर्य यही है कि जिस प्रकार सभी वंशों में तीर्थंकर वंश, कुलों में श्रावक कुल, गतियों में सिद्ध गति, सुखों में मुक्ति सुख, धर्मों में अहिंसा धर्म, मानवीय वचनों में साधु वचन, श्रुतियों में जिन वचन और शुद्धियों में सम्यक् दर्शन उत्तम है, उसी प्रकार समस्त साधनाओं में समाधि-मरण उत्तम है। निष्कर्षत: यह कहा जा सकता है कि संथारा-

(1) एक आध्यात्मिक संस्कार है जबकि आत्महत्या एक विवेकहीन पद्धति।
(2) समाधि लेकर मृत्यु को वरण करना है।
(3) जीवन पर मृत्यु की विजय है।
(4) एक धार्मिक अनुष्ठान है। आत्महत्या की तरह एक भौतिक क्रिया नहीं।
(5) पूर्णत: स्वैच्छिक होता है।
(6) मरण के पीछे कोई विवशता या बाध्यता लिये नहीं होता।
(7) मोक्ष प्राप्ति का लक्ष्य लिए होता है न कि सांसारिक कष्टों से मुक्ति प्राप्त करना है।
(8) अन्न-जल का त्याग लिये होता है।
(9) धीरे-धीरे प्राणांत की प्रक्रिया लिये होता है।
(10) जीवन के उत्तरार्द्ध में लिया जाता है।
(11) मृत्यु के स्वागत का पूर्व कल्प होता है।
(12) क्रोध, मान, माया, लोभ एवं मरण का त्याग लिए होता है।
(13) संयमित जीवन जीने वाले ही करते हैं।
(14) भाग्यशाली एवं पुण्यशाली व्यक्ति करता है।
(15) न जीने का भाव और न मरने की इच्छा लिये होता है।
(16) शरीर के प्रति पूर्णत: अनाशक्ति का भाव लिए होता है।
(17) जो व्यक्ति ग्रहण करता है उसका परिवार भी यश अर्जित करता है।
(18) वरण करने वाला समाज में प्रतिष्ठा और पुण्य अर्जित करता है।
(19) सर्व पापों से छुटकारा दिलाता है।
(20) वर्तमान जीवन से मुक्ति और भावी जीवन में सद्गति दिलाता है।
(21) मनुष्य को ही नहीं, पालतू जीवों को भी कराया जाता है।
(22) संयमी साधक अपने आपका पराक्रम पुरुषार्थ अपने आप के लिए करता है।
(23) अन्तत: कुछ ही भव में मोक्षगामी बना देता है।

राजस्थान उच्च न्यायालय की जयपुर खण्डपीठ में संथारे को चुनौती देते हुए जो रिट याचिका लगी, श्रावकों के निवेदन पर रिट के उत्तर हेतु उदय मुनि ने सभी धर्मों एवं शास्त्रों के हवाले से 42 बिन्दुयुक्त परिपत्र तैयार किया और यह सिद्ध किया कि संथारा न आत्महत्या है न इच्छा-मृत्यु। यह जीवन के अंतिमकाल की उत्कृष्टतम आत्म-साधना है जिसके लिए शरीर या शरीर की वेदना की कष्टानुभूति के स्थान पर आत्मानुभूति का बोध होता है। इस दृष्टि से मृत्यु एक महोत्सव ही है। न्यायालय ने इस पर गम्भीरता से विचार किया और संथारे को आत्महत्या अथवा इच्छा-मृत्यु मानने पर अपनी असहमति व्यक्त की।

शब्द रंजन

उदयपुर, गुरूवार 15 फरवरी 2024

सम्पादकीय

लोककलाकारों को पद्मश्री

प्रतिवर्ष ही गणतंत्र दिवस पर भारत सरकार द्वारा पद्म पुरस्कारों की घोषणा की जाती है। विविध क्षेत्रों में असाधारण प्रतिभा के धनीमानी लोगों को यह सम्मान प्रदान कर सरकार भी गौरवान्वित होती है और प्राप्तकर्ता को और अधिक काम करने की प्रेरणा के साथ अन्यों को भी कुछ अधिक उपलब्धिमूलक काम करने की प्रेरणा मिलती है।

एक जानकारी के अनुसार राजस्थान ही एक ऐसा प्रान्त है जहां सर्वाधिक लोककलाकार पद्मश्री से सम्मानित हुए हैं। खड़ताल वादन में सिद्दीक, माण्ड गायन में अल्लाजिलाईबाई, मूर्ति निर्माण में मोहनलाल कुम्हार, फड़ चित्रकारी में श्रीलाल जोशी, कालबेलिया नृत्यांगना गुलाबो, मांड गायक अली मोहम्मद-गनी मोहम्मद जैसे और भी कई नाम हैं। इस वर्ष बहुरूपी कला में भीलवाड़ा के जानकीलाल को पद्मश्री सम्मान मिला तो लगा कि इस प्रकार की मरणासन्न कलाओं को जीवनदान मिला है।

डॉ. महेन्द्र भानावत ने बताया कि जब वे भारतीय लोककला मण्डल में थे तब इन सब कलाकारों को वहां होने वाले समारोहों में लगातार आमंत्रित किया है और अनेक पत्र-पत्रिकाओं में लिखा भी। उन्होंने बताया कि पहलीबार जानकीलालजी से उन्होंने 12 अप्रेल 1980 को भेंट की जब वे चित्तौड़ में रहते थे। बाद में भीलवाड़ा चले गये। जानकीलालजी ने तब बहुरूपी कलाओं के बारे में जैसे पूरा पिटारा ही खोल दिया।

उन्होंने बताया कि सामन्तीकाल में बहुरूपी कला परवान पर थी और राजा-राणा-सामन्त भी इस कला के बड़े कद्रदान थे। उन्होंने बताया कि उनके पिता हजारी के साथ भी उन्होंने कई स्वांग निकाले। एकबार एक सिपाही एक नक्काल को पकड़ अकबर बादशाह के पास ले गया। उसे देख बादशाह ने कहा, किस मनहूस को पकड़ ले आये हो, पता नहीं खाना भी मिलेगा या नहीं, इसे ले जाओ, कल फांसी पर लटका देना। दूसरे दिन नक्काल बोला, जहांपनाह, कल मेरी शक्ल देखने से आपको खाने की फिक्र हुई किन्तु आपकी शक्ल देख मुझे तो फांसी का हुक्म हो गया। इस पर बादशाह हंस पड़े और उसे माफ कर दिया।

एकबार चित्तौड़ के जंगल में महाराणा फतहसिंहजी शिकार को निकले। थोड़ी दूर उन्हें असली नवहत्था शेर होने की भनक मिली तब महाराणा ने निशाना साधा। शेर को गोली लगी। वह पांव के बल खड़ा हो गया। उसके सीने से फव्वारे की तरह खून छूटा तब शेर बोला, खम्माघणी अन्नदाता, म्हूं जोरो भांड हूं। जब महाराणा उसके पास पहुंचे तो जोरा अपने जिरहबख्तर उतार नाले में रंग से सने हाथ धो रहे थे। इस पर महाराणा बड़े खुश हुए और मोहरमगरी के पास दस बीघा जमीन बख्शी।

यहां के केलवा के परसराम भांड की स्मृति भी डॉ. भानावत को है जब 1958 में पहलीबार कलामण्डल ने लोककलाकारों के प्रशिक्षण शिविर आयोजित किये जिनमें परसराम को सरकार द्वारा सर्वश्रेष्ठ कलाकार के रूप में पुरस्कृत किया गया।

लेकिन बदलते परिवेश में जब नई-नई तकनीक का विस्तार और सोशल मीडिया के बाद मनोरंजन की ये सारी विधाएं लगभग समाप्त हो गई दिख रही हैं ऐसे में इन कलाओं के संरक्षण, उन्नयन और विकास के लिये सरकार को कुछ नये कदम उठाने होंगे और पद्मश्री की उपाधि के साथ-साथ इन कलाकारों को एकमुश्त या आजीवन ऐसी आर्थिक मदद भी देनी होगी ताकि वे इन कलाओं को जीवित रखते हुए अपने परिवार का भी भरणपोषण कर सकें।

डॉ. धींग को 'साहित्य वारिधि' एवं श्रुतसेवा सम्मान

उदयपुर। साहित्यकार डॉ. दिलीप धींग को श्रुतसेवा निधि न्यास द्वारा 4 फरवरी को फिरोजाबाद में 'साहित्य वारिधि' की मानद उपाधि के साथ शांतिदेवी गुप्त श्रुतसेवा अलंकरण से सम्मानित किया गया। न्यास के 18वें वार्षिक समारोह 'अक्षराभिषेक उत्सव' में उन्हें न्यास का यह सर्वोच्च राष्ट्रीय सम्मान जैनविद्या, साहित्य व अहिंसा के क्षेत्र में उनके सतत, सुदीर्घ व उल्लेखनीय योगदान के लिए प्रदान किया गया।

मुख्य अतिथि रमेशचंद्र गुप्त, अध्यक्ष मुकेशकुमार जैन, निदेशक अनूपचंद्र जैन एवं पदाधिकारियों ने उन्हें प्रशस्ति-पत्र, शील्ड, शॉल, पुष्पहार, साहित्य और 25 हजार रुपये के मानधन के साथ सम्मानित किया। 'जैन संदेश' के संपादक अनूपचंद्र जैन ने कहा कि वे पिछले लगभग 40 वर्षों से डॉ. धींग को पढ़ रहे हैं। हर विधा में वे लिखते हैं और हर पत्रिका में उनकी रचनाएँ पढ़ने को मिलती हैं। डॉ. धींग ने न्यास-संस्थापक स्व. प्राचार्य नरेंद्र प्रकाश जैन के सारस्वत योगदान का स्मरण किया और 'जैन संस्कृति की प्राचीन विरासत' पर व्याख्यान दिया। अजमेर के चिकित्सक डॉ. आरके गोखरू को आरोग्य भारती एवं अशोककुमार जैन 'लाले' को संयम सेवा सम्मान दिया गया। समारोह में पूर्व सांसद कवि ओमपालसिंह निडर, सह-निदेशक अजयकुमार जैन, कोषाध्यक्ष प्रमोदकुमार जैन सहित अनेक साहित्यकार, विद्वान, शिक्षाविद्, समाजसेवी और प्रबुद्धजन उपस्थित थे।

-अमितकुमार जैन 'राजा'

गौरीकांत शर्मा बने उपनिदेशक, कार्यभार संभाला

उदयपुर (सुजस)। जनसंपर्क सेवा के अधिकारी गौरीकांत शर्मा उपनिदेशक पद पर पदोन्नत हुए। उन्होंने 13 फरवरी को सूचना एवं जनसंपर्क कार्यालय उदयपुर में उपनिदेशक पद पर कार्यभार संभाला। आयुक्त, सूचना एवं जनसंपर्क विभाग जयपुर ने विभागीय अधिकारियों के पदोन्नति आदेश जारी किए। इसमें जनसंपर्क सेवा के वर्ष 2012 बैच के अधिकारी गौरीकांत शर्मा सहायक निदेशक से उपनिदेशक पद पर पदोन्नत हुए। शर्मा उदयपुर में ही उपनिदेशक के पद विरूद्ध पदस्थ थे। इस दौरान जनसंपर्क अधिकारी मनीष जैन, सहायक जनसंपर्क अधिकारी विनय सोमपुरा, लेखाधिकारी दिनकर खमेसरा व जसवंतसिंह भाटी, अतिरिक्त प्रशासनिक अधिकारी लक्ष्मणसिंह, सहायक प्रशासनिक अधिकारी वाचस्पति देराश्री, सुनील व्यास, हीरालाल शर्मा, राजसिंह सदाणा, केसरबाई सहित विभिन्न मीडिया संस्थानों के प्रतिनिधियों ने शर्मा का अभिनंदन करते हुए बधाई दी।

संतोष होने पर लेखन थम जाता है जबकि असंतोष अभिव्यक्ति की बेचैनी देता है : डॉ. विद्याविंदुसिंह

दिनांक 15-16 जनवरी को उदयपुर के सुखाड़िया विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग द्वारा 'लोकसाहित्य एवं संस्कृति : चिन्तन और चुनौतियां' विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी में बतौर मुख्य अतिथि भाग लेने लखनऊ से डॉ. विद्याविन्दुसिंह आई थीं। दूसरे दिन डॉ. कहानी भानावत ने भेंट कर उनसे साहित्य और संस्कृतिपरक उनके दीर्घकालीन लेखकीय अनुभवों को लेकर लम्बी बातचीत की। यहां उस बातचीत के मुख्य अंश प्रस्तुत हैं।

(1) डॉ. कहानी भानावत - आपको लिखने की प्रेरणा कब किससे मिली?

डॉ. विद्याविंदुसिंह - बचपन से ही साहित्य पढ़ते-सुनते मन में प्रश्न उठता था कि क्या हम भी लिख सकते है? फिर अंत्याक्षरी में भाग लेने पर जब कविता याद नही आती तो स्वयं बनाकर-बनाकर उत्तर देने लगी। यहीं से कविता शुरू हुई। फिर किसी की व्यथा-कथा सुनकर मैं पढ़े हुए साहित्य से तुलना करती कि इसमें भी उसी तरह का दर्द व्यक्त हुआ है जैसे हमारे आसपास के लोगो का दर्द है। यह दर्द का अनुभव ही प्रेरक बना लेखन का। इसी तरह मेरे पिताजी और परिचित कवियों लेखकों ने लिखने के लिए प्रेरित किया।

डॉ. विद्याविंदुसिंह के साथ डॉ. कहानी भानावत

(2) डॉ. कहानी - आपके लेखन का क्या प्रयोजन है?

डॉ. विद्या - लिखने का प्रयोजन अपने अनुभवों को अभिव्यक्ति देना ही रहा। जब किसी के दुःख से अपने मन में दुख की अनुभूति हुई तो अभिव्यक्ति के लिए मन बेचैन हुआ और हाथ में कभी कलम आ गई या तूलिका जो मेरे पिताजी ने थमायी थी।

(3) डॉ. कहानी - आपके लेखन की मुख्यधारा क्या रही?

डॉ. विद्या - मुझे तो जब जिसमें लिखा वही मुख्यधारा लगी। अभी तक मैं निर्णय नहीं कर पाती कि मेरी मुख्यधारा क्या है क्योंकि जिस समय जिस धारा में अपनी अभिव्यक्ति दी वही अपनी लगने लगी। मैंने सभी विधाओं में लिखा और हर विधा में लिखकर संतोष मिला कि मैं अपनी बात कह सकी।

(4) डॉ. कहानी - क्या आप अपने लेखन से संतुष्ट हैं?

डॉ. विद्या - संतोष हो जाने से लेखन थम जाता है। असंतोष अभिव्यक्ति की बेचैनी देता है और तरह-तरह से अभिव्यक्ति कराता रहता है। मुझे अभी भी लगता है कि बहुत कुछ कहना और लिखना बाकी है।

(5) डॉ. कहानी - आज के सन्दर्भ में लोक को आप किस रूप में देखती हैं?

डॉ. विद्या - लोक का विस्तृत असीमित रूप आज भी मेरे सामने तरह-तरह के रूप धारण कर उपस्थित होता है। वह मेरे लिए ईश्वर ही है और संसार भी। उसमें जितने ही गहरे डूबिये अनमोल रत्न मिलते हैं। उन्हें चुन-चुन कर सबके सामने रखने का चाव मन में बना रहता है।

(6) डॉ. कहानी - लोक और शास्त्र को आप किस रूप में देखती हैं?

डॉ. विद्या - लोक और शास्त्र मेरी दृष्टि में परस्पर पूरक हैं। इनमें कोई विभाजक रेखा नहीं है। ये परस्पर गुँथे हुए हैं और मिलकर लोक कल्याण करते रहे हैं। आगे भी करते रहेंगे। ऐसा मेरा विश्वास है।

(7) डॉ. कहानी - क्या आज लोक है? और आगे भी रहेगा?

डॉ. विद्या - जी हाँ लोक शाश्वत है और सदैव रहेगा।

(8) डॉ. कहानी - आपको पद्मश्री किस हैसियत से मिली?

डॉ. विद्या - मुझे लगता है कि सबके आशीर्वाद और शुभकामनाओं के परिणाम से मैं निरंतर साहित्य से जुड़ी रही। वह चाहे लिखित साहित्य हो या वाचिक दोनों ही मेरी साधना की भूमि रही। मैंने साहित्य के लोकहित भाव को जन-जन तक पहुँचाने का एक लघु प्रयास किया जो गिलहरी के प्रयास जैसा ही रहा होगा। पर श्रीराम ने अपनी अगुँलियों से स्पर्श की जो रेखा खींच दी वही मेरी हैसियत है और उसी के लिए मुझे यह सम्मान पाने का सौभाग्य मिला। इसे मैं पूर्वज साहित्यकारों और परिजनों का वरदान मानती हूँ साथ ही वर्तमान सरकार की उस पारदर्शिता के प्रति कृतज्ञ भाव से आभार देना चाहती हूँ जिन्होंने जमीन से जुड़ी हुई मेरी साधना को महत्त्व दिया।

(9) डॉ. कहानी - विश्वविद्यालयों में लोकपक्ष में जो शोध हो रहे है क्या आप संतुष्ट हैं?

डॉ. विद्या - कुछ तो हो रहा है इसी बहाने लेकिन गुणवत्ता की दृष्टि से कुछ नये पैमाने सुधार में लाने की आवश्यकता है जो वर्तमान नयी शिक्षा नीति में प्रस्तुत होंगे ऐसा विश्वास है।

(10) डॉ. कहानी - विश्वविद्यालयो में पढ़ाने वाले ही गाइड हो सकते हैं जबकि उनसे अधिक स्थापित वे है जो स्वतंत्र हैं। इस संबध में आपके क्या अनुभव हैं?

डॉ. विद्या- प्राय: विश्वविद्यालय के निर्देशक शोध छात्रों को स्वतंत्र रूप से कार्य करने वाले विषय विशेषज्ञों के पास मार्गदर्शन के लिए भेजते हैं। यह मेरा निजी अनुभव है। शोधार्थियों और उनके निर्देशकों ने आभार व्यक्त करते हुए स्वीकार किया कि यह मार्गदर्शन अच्छा परिणाम देता है।

यह तो विश्वविद्यालय की नीति विषयक प्रश्न है। वैसे यह प्रश्न विचारणीय है क्योंकि इससे शोधार्थियों को सुविधा होगी और उन्हें वांछित निर्देशन मिल सकेगा। वैसे शोधार्थियों को निजी प्रयास के द्वारा यह सुविधा विशेषज्ञों से मिल सकती है। इससे उनके अध्ययन की प्रामाणिकता भी सिद्ध होगी किन्तु यदि विश्वविद्यालय की नीति में यह सहयोग लेने की स्वीकृति मिल जाये और विशेषज्ञों के प्रति विश्वविद्यालय सहयोग के लिए कृतज्ञता व्यक्त करे तो यह एक अच्छी पहल होगी।

शोधार्थियों को भी चाहिए कि वह पुस्तकों से ही शोध सामग्री का ज्ञान प्राप्त करने का प्रयास मात्र न करें। विशेष क्षेत्र में स्वयं भ्रमण करके और उससे जुड़े हुए सूचकों से स्वयं मिलकर अपनी शोध सामग्री तैयार करें तो अच्छे परिणाम आयेंगे और शोधार्थियों को भी कुछ नया करने का संतोष मिलेगा।

पोथीखाना

'इन्द्रप्रस्थ भारती' का संग्रहणीय विशेषांक

रांगेय राघव को पढ़ना मुझे अच्छा लगता है। उनको मैं देख तो पाया नहीं, उनके देहावसान के दो बरस बाद मैं संसार में आया। घर में उनकी चर्चा होती थी और सात बरस का स्कूल गया तो उच्च प्राथमिक कक्षा वाले कमरे में उनकी छवि देखी।

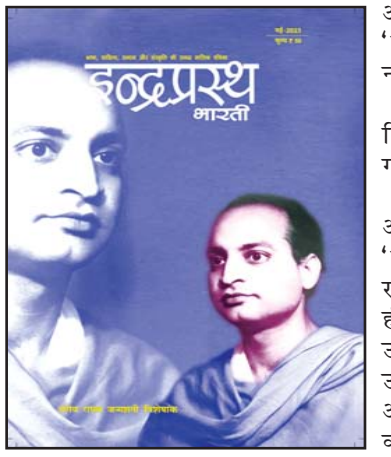

पहली बार देखा उन्हें तस्वीर में मढ़े। कान पर अंगुली लगाए और आंखें मेरी ओर लगाए। ऐसी ही आंखों से उन्होंने समय को देखा, समाज को देखा, सम्बन्धों को, सम्बन्धियों और जो नहीं हैं, उसको भी देखा! पिताजी उनका उदाहरण देकर कहते थे कि रांगेय राघव ने गुरु गोरखनाथ को देखा और समझा तभी तो ऐसा लिखा कि मेरे घर में उनकी 'गोरखनाथ और उनका युग' की चार प्रतियां थीं। दादा की, पिताजी की, छोटे और बड़े चाचाजी की! कोई अपनी प्रति दूसरे को देना नहीं चाहता था।

मैंने स्वयंपाठी रूप में दसवीं और ग्यारहवीं की। 80 की बात है। तब बारहवीं नहीं थी। विशेष हिन्दी में रांगेय राघव का उपन्यास था- धरती मेरा घर। मुझे यह इतना भाया कि अनेक अंश ज्यों के त्यों याद हो गए। अभी भी याद हैं। उसका पात्र भी मुझ सा ही कृष्ण था।

यह गाडियां लोहारों के समाज पर था और ऐसा लिखा था मानों समाज शास्त्र में कहानी की मिठास घोल दी हो, इतिहास की नजीर दे दी हो और काव्य की करामात दिखाई हो। उसके बाद मैं खुद गाडियां लोहारों के अनेक डेरों का अध्ययन करता रहा। उनके बसाए पहले गांव की यात्रा की... अनेक प्रसंग हैं। कुछ ऐसे ही प्रसंग मैंने उदयपुर आगमन पर आदरणीया सुलोचना जी को सुनाए थे। 'कब तक पुकारूं' धारावाहिक की नायिका किट्टी सुष्मिता जी को भी कहे।

रांगेय राघव को मुझे पढ़ाना भी प्रिय रहा। उनको 2023 में सौ बरस हो गए।

इस स्मरणीय वर्ष में हिन्दी अकादमी ने एक बड़ी पहल की। 'इंद्रप्रस्थ भारती' का मई अंक रांगेय राघव पर केन्द्रित होकर आया है। पहले ही लेख में रामदरश मिश्रजी ने कहा, उनमें अनुभव की बड़ी शक्ति थी। उन्होंने जीवन को उसकी गहनता में अनुभव किया इसलिए वे अपनी कहानियों में जीवन के बहुत सघन अनुभवों को उभार सके हैं।

प्रो. राजेंद्ररंजन चतुर्वेदी, प्रो. हेतु भारद्वाज, महेश दर्पण, चरणसिंह पथिक, सीमंतिनी राघव और अशोक शास्त्री ने रांघेय राघव के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का विविध कोणों से साहित्यिक, सांस्कृतिक तथा संस्मरणात्मक विश्लेषण कर विशेषांक को स्थायी महत्त्व का बना दिया।

-डॉ. श्रीकृष्ण 'जुगनू'

10 फरवरी जन्मदिवस पर –

संघर्षों में तपते वामन से विराट बने बालकवि बैरागी : - डॉ. पूरन सहगल

यदि मैं अपनी आयु सीमा की बात करूँ तब मेरा परिचय ऐसे लोगों से हुआ जो वामन देह लिए पूरा देश नापते हुए दिखते हैं। बालकवि बैरागी, पं. रामनारायण उपाध्याय, डॉ. भगवतीलाल राजपुरोहित, डॉ. महेन्द्र भानावत, भाई वसंत निरगुणे। एक नाम ऐसा जिनसे मेरा कोई सम्पर्क, सान्निध्य नहीं रहा किन्तु युगपुरुष के समय में जीने का सौभाग्य मुझे मिला- वह नाम है लालबहादुर शास्त्री। इन्हें छोड़कर पूर्व के पाँच वामन विराटों के साथ रहने, काम करने, दिशाबोध लेने और आशीर्वाद लेने का सौभाग्य मुझे प्राप्त है।

ये सभी बौने कद के विराट व्यक्तित्व हैं। इन्होंने जीवन में जितने संघर्ष झेले हैं, जितने अभाव भोगे हैं, वे सब प्रेरक प्रसंगों की तरह मुझे सदा प्रभावित करते रहते हैं। मैंने कभी दो साखियों में सुना था-

'जण के जीवन में कदी, भोग्या नहीं अभाव।
बासी रोटी लूण ती, नी खाई थी चाव।।

तथा

पग-पग खाई ठोकरां, पग-पग खाया घाव।
चढ्या-पड्या फेर चढ्या, पहुँच्या मंजिल ढाँव।।

जिसने जीवन में कभी अभाव नहीं भोगे, ठण्डी बासी रोटी पर नमक डालकर नहीं खाई, जिसने हर कदम पर ठोकरें नहीं खाई, घाव नहीं झेले, जो बार-बार चढ़े, गिरे, फिर चढ़े और सदा प्रयत्नशील बने रहे, वे अवश्य निर्धारित मंजिल तक पहुँच गए। ये है वामन विराटों की संघर्ष यात्रा। कहते हैं छत्रपति शिवाजी और मुगल सम्राट अकबर भी वामन थे। दैहिक व्यक्तित्व को शक्तिशाली मान लेना बहुत महत्त्वपूर्ण नहीं होता।

श्री बालकवि बैरागीजी को मैं तब से जानता हूँ जबसे मैं स्वयं को जानता हूँ। वे मुझसे जेष्ठता में पांच वर्ष बड़े थे किन्तु श्रेष्ठता में वे इतने बड़े थे कि मेरा कहीं स्थान ही नहीं बैठता। मैंने दादा को संघर्ष करते देखा है। संघर्षों के आवे में पकते देखा है। कई बार वे आगे बढ़े और फिर पीछे हटे किन्तु निरंतरता नहीं टूटी। संकल्प खण्डित नहीं हुए। सपने नहीं टूटने दिए। हमारे पूर्व राष्ट्रपति अब्दुल कलाम साहब ने कहा था- 'लोग कहते हैं सपने नहीं देखना चाहिए। दिवास्वप्न तो कभी भी नहीं। मैं कहता हूँ सपने अवश्य देखना चाहिए। वे सपने ही आगे जाकर हमारे संकल्प बनते हैं। संकल्पों को पूरा करने के लिए हमें हमेशा पूरी हिम्मत और बुद्धि से प्रयत्नशील भी रहना चाहिए।''

मैं ठीक से नहीं जानता, यह सन्देश दादा को कहां से मिला होगा या 'किस-किस' से मिला होगा? लेकिन इस सन्देश का पहला मंत्र उन्हें अपनी ही 'माँ' से मिला। यह मेरा विश्वास है। दादा की माँ स्वयं संघर्षों, अभावों और सामाजिक एवं पारिवारिक विसंगतियों से जूझती रहीं। न कभी थकीं न हारीं। दादा बैरागीजी के सामने अनेक ऐसे अवसर आते रहे जब अवसर उनके हाथ में आए और लौट गए या लौटा लिए गए, तब भी उन्होंने हताश होने से अपने को बचा लिया। पाने के दु:ख और खोने के दु:ख से वे कभी विचलित होते हुए मुझे नहीं दिखे। प्रयत्न निरंतर बना रखा और अन्तत: सफलता प्राप्त की।

मैं राजा भरथरी की योग साधना पर काम कर रहा था। उस गाथा की एक राणी सुखमणा उन्हें शिक्षा देते हुए कहती है- 'हे जोगी भरथरी, भीतर झांको। भीतर अणहद का मधुर राग बज रहा है। भीतर अमृतधार बह रही है। बाहर का मोह त्याग दो। भीतर समाधिस्थ हो जाओ।' मैं कहता हूँ कवि से बड़ा कोई जोगी नहीं होता। वह सदा भीतर झांकता है। भीतर के अणहदनाद को वह सदा सुनता रहता है। भीतर बह रही अमृत धारा में वह सदा स्नान करता है। यही कारण है कि, वह मन के विशाद को भी पी जाता है, शिव की तरह। यदि विशाद को अभिव्यक्ति मिलती है तब वह भी लोककल्याण करने के लिए। दादा ने विशाद को खूब पिया। ओख लगाकर पिया। उनकी कविताओं में इसकी अभिव्यक्ति खूब हुई है।

संघर्षों की बात करते-करते मुझे दादा की उस शक्ति का स्मरण हो आता है जिसके बल पर वे संघर्षों से न हारे और न थके। उस पराशक्ति का नाम मैं ससम्मान लेना चाहता हूँ। सुशील चन्द्रिका बैरागी ही वह शक्ति थी जिसने दादा को सदा ताजादम बनाए रखा। असहमतियों को सहमतियों में और विसंगतियों को सुसंगतियों में बदल लेने की अद्‌भूत शक्ति थी उनमें। मृत्यु के उन क्षणों का मैं साक्षी हूँ जब वे मृत्यु का वरण करने के लिए स्वयं को संयत किए हुए थीं। उस समय उनके देह में असह्यय पीड़ा थी। मृत्युभय बिल्कुल नहीं था। मैंने अपनी माँ को मरते नहीं देखा था। भाभी माँ को मरते देखकर मुझे लगा था आज मेरी माँ मर रही है।

दादा बाहर बैठे थे। तटस्थ! शोक से मुक्त। एक सिद्ध योगी की तरह। भीतर के सारे विशाद को भीतर थामे हुए। तभी मुझे भगवान कृष्ण का गीता सन्देश 'स्थितप्रज्ञ' भाव याद आया। सत्य को इतनी सहजता से स्वीकार कर लेना सबके बस में नहीं होता। यही तो स्थितप्रज्ञता होती है।

बावजूद इसके वह विशाद! दादा के भीतर अवश्य बना रहा। बाहर से साबुत दिखने वाला काँच कहीं-न-कहीं दरका तो अवश्य था। संघर्ष शक्ति कुछ तो कम पड़ी थी। जीवन में एक विचलन तो थी। वह बाहर व्यक्त भले न हो। भीतर तो वह पीड़ा स्थित सदा कायम रही।

डॉ. सुमनजी ने कहा था- 'बैरागी के एक फेफड़े में कृष्ण शंख है तो दूसरे फेफड़े में कृष्ण की बाँसुरी।' बाँसुरी में यदि रास के मधुर स्वर बजते थे तो राधा के बिछोह की पीड़ा के स्वर भी तो निकलते थे। शंख तो संघर्ष का नाद था। महाभारत केवल कुरुक्षेत्र में ही नहीं ठना था, वह कृष्ण के भीतर भी मचल रहा था।

ऐसी ही पीड़ा और महाभारत की विचलन सदा दादा के हृदय में उन्हें विश्चलित करती रही। वह कब किस रूप में प्रकट होगी, यह कौन कह सकता था? निश्चित ही मुझे यह अनुमान और अधिकार भी था कि वह व्याकुलता किसी कालजयी कविता के रूप में प्रकट होगी। जब तक वह अभिव्यक्त नहीं होगी उसकी अकुलाहट बनी ही रहेगी। उसे अभिव्यक्त हो ही जाना चाहिए। अपनी कुण्ठाओं और पीड़ा को अभिव्यक्त करने का कविता से बड़ा कोई भी माध्यम नहीं है। दादा की कविता जीवित रही। मुखर होती रही।

दादा अपना 82वाँ जन्मदिवस मनाने की बात जब करते तब उन्हें यह पहला शोक दिवस लगने लगा। पहली बार उन्हें अपना जन्म दिवस सुशीलाजी के बिना मनाना था। कहां मनाना है? कैसे मनाना है? कई प्रश्न उनके हृदय में आवाजाही कर रहे थे। 'दु:खवा मैं का से कहूँ मोरि सजनी' वाली स्थिति को भले ही दादा नकारें किन्तु मुकुर नहीं सकते थे। जब हम उनके परिजन इस स्थिति से नहीं उबर पा रहे तब दादा कैसे उबर पाते?

दादा ने उस रिक्तता को भरने का बहुत प्रयत्न किया। समय चलता रहा किन्तु स्मृतियाँ भी चलती रही। दादा स्थितिप्रज्ञ बने रहे। जीवट व जीवंतता बरकरार रही। वे एक विराट पुरुष थे। संघर्षशील थे। स्थितप्रज्ञ थे। सब कुछ सहज बना लेंगे। इसका विश्वास मुझे था। इस वामन व्यक्तित्व को प्रणाम। इस विराट योग पुरुष को नमन!

पुरुषोत्तम श्रीराम : जैन साहित्य में

-श्रमण डॉ. पुष्पेन्द्र -

जैन मनीषियों व साहित्यकारों ने 'राम' के विश्वव्यापी व्यक्तित्व की दृष्टि से उन्हें 'शलाका पुरुष' के रूप में स्थान दिया है। राम प्रत्येक भारतीय भाषा के पटल पर विद्यमान रहे हैं इसलिए प्राकृत, संस्कृत, अपभ्रंश, कन्नड़, मराठी, गुजराती, राजस्थानी एवं हिन्दी काव्यकारों ने उन्हें आदर्श रूप के आधार पर ही प्रस्तुत किया है।

कुलों को धारण करने वाले कुलधर कहलाते हैं, जिन्हें 'मनु' भी कहते हैं। अंतिम कुलकर नाभिराय थे, जिन्हें 'तिलोयपण्त्ती' में भी 'मनु' कह गया है। इसके अनंतर शलाका पुरुषों का उल्लेख आता है। उसमें 24 तीर्थंकर, 12 चक्रवर्ती, 9 बलभद्र, 9 नारायण और 9 प्रति नारायण इस तरह कुल 63 (तिरसठ श्लाका) पुरुष हुए हैं। नौ बलदेवों में राम का उल्लेख है। प्रागैतिहासिक काल में राम को पुरुषोत्तम कहा गया है। वे असाधारण व्यक्तित्व के महाधनी थे। वे 'नरत्व' से 'नारायणत्व' की ओर अग्रसर हुए। उन्हें परम प्रतापी, धर्मज्ञ, कर्तव्य परायण, पितृ आज्ञाकारी, मातृशक्ति के प्रति आस्थावंत, गम्भीर, धीर- वीर एवं नैतिक गुणों से परिपूर्ण परिलक्षित किया गया है ।

प्राकृत में रचित अनेक काव्यों में राम को 'पद्म' भी कहा गया है। विमलसूरि ने 'पउमचरियं' नामक ग्रन्थ की प्राकृत में रचना की है जो महाराष्ट्री प्राकृत में है। यह काव्य पौराणिक है। इसमें 'राम' के चरित्र की यथार्थवादिता के भी दर्शन होते हैं। इसमें प्राकृतिक घटनाओं मानवीय मूल्यों, धार्मिक वातावरण, सामाजिक रीतियाँ व रूपात्मक विवरण है। इसमें परम प्रतापी पुरुषों के जीवनवृत्त आदि का भी समावेश है।

जैन रामकथा पैराणिक कथा है। इसमें लोकतत्व, कालतत्व, वंश परंपरा आदि भी विद्यमान है। जैन रामकथा में राम, लक्ष्मण, भरत आदि के चित्रण के साथ रावण, जटायु आदि के पूर्वजन्मों की कथाएँ भी विद्यमान हैं। ये अवसर्पिणी काल के चौथे आरे में उत्पन्न हुए हैं। राम शलाका पुरुष हैं। पुरुषोत्तम हैं व पद्म सदृश होने से 'पद्म' भी इन्हें कहा गया है। चरित्र एवं पुराण काव्यों में राम को 'पद्म' उल्लेखित किया गया है।

इसी प्रचलित 'पद्म' शब्द के आधार पर आचार्य रविषेण ने 'पद्मपुराण' लिखा। सोमदेव भट्टारक, धर्म कीर्ति भट्टारक ने संस्कृत भाषा में एवं महाकवि स्वयंभू ने अपभ्रंश में 'राम' का चित्रण किया है। कवि रइधू, चन्द्रकीर्ति एवं ब्रह्मजिनदास ने भी अपभ्रंश में 'पउमचरीउं' ग्रन्थ की रचनाओं में 'राम' के लौकिक व धार्मिक स्वभाव का बड़ा ही मार्मिक चित्रण प्रस्तुत किया है।

'पुरुषोत्तम श्रीराम' जैन धर्म के बींसवें (20) तीर्थंकर मुनिसुव्रत काल में हुए जो सहस्त्रों वर्षों का काल माना जाता है। 'राम' भरतखण्ड के साकेत में उत्पन्न हुए, जिसे अयोध्या भी कहा गया है। अयोध्या, चित्रकूट, दसपुर, दण्डकवन, किष्किन्धा आदि स्थान जंबूद्वीप के अन्तर्गत 'भरत खण्ड' में विद्यमान थे। भरत खण्ड को 'भरत क्षेत्र' भी कहा जाता है। भरत क्षेत्र के उत्तर में हिमवान पर्वत और मध्य में विजयारध पर्वत होने का उल्लेख मिलता है और 'राम' का सम्बन्ध भरत क्षेत्र से रहा है जो कि अपने आप अतुलनीय है।

प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव इक्ष्वाकु वंश के थे। इक्ष्वाकु वंश की इसी पृष्ठभूमि से 'सूर्यवंश' का उद्‌भव हुआ है। इसीलिए 'राम' सूर्यवंशी कहलाए। श्रीराम आठवें (8) बलदेव हैं जिसे तिलोयणणति में भी देखा व समझा जा सकता है। 'राम' बलदेव हुए हैं जिसके माध्यम से वे परम प्रतापी, तेजस्वी, सौम्य, धीर, वीर, गुणी, महाबली एवं अपराजेय रहे। वस्तुत: राम पुरुषोत्तम हैं, क्यूँकि उनका समग्र जीवन पुरुषोत्तम पर ही आधारित रहा। वे अन्याय एवं अत्याचारों को जड़ मूल से समाप्त करने के लिए जन्म लेते हैं। वे उत्तमोत्तम कर्म करने वाले महापुरुष रहे हैं। वस्तुत: राम अपने युग के पुरुषोत्तम थे व आज भी पुरुषोत्तम राम बने हुए है व जनमानस को भी पुरुषार्थ पुरुषोत्तम बनने का सफल संदेश दे रहे हैं।

राम अयोध्यापति दशरथ के पुत्र थे। वैदिक, जैन एवं बौद्ध परम्परा में राम के विविध आदर्श हैं जो हजारों वर्षों से जनमानस को चेतना का पाठ पढ़ा रहे हैं। 'राम' के चरित्र में आत्मस्वरूप की उत्कृष्ट स्थिति है, जो कि वर्तमान समय में आत्मस्वरूप की ओर अग्रसर करती है। राम के नाम में विश्वव्यापकत्व का रहस्य है जो उन्हें कालजयी बनाता है। प्रत्येक युग के विचारकों ने राम-चरित को विकसित किया है।

जहाँ वैदिक परम्परा में भगवान विष्णु का अवतार माना है, वहीं जैन मनीषियों व साहित्यकारों ने 'राम' के विश्वव्यापी व्यक्तित्व की दृष्टि से उन्हें 'शलाका पुरुष' के रूप में स्थान दिया है। राम प्रत्येक भारतीय भाषा के पटल पर विद्यमान रहे हैं इसलिए प्राकृत, संस्कृत, अपभ्रंश, कन्नड़, मराठी, गुजराती, राजस्थानी एवं हिन्दी काव्यकारों ने उन्हें आदर्श रूप के आधार पर ही प्रस्तुत किया है।

ताज होटल्स समूह ने डॉ. लक्ष्यराज सिंह मेवाड़ को बनाया ब्रांड एंबेसडर

उदयपुर (ह. सं.)। भारत की प्रतिष्ठित दी इंडियन होटल्स कंपनी लि. (ताज होटल्स समूह) ने मेवाड़ के पूर्व राजपरिवार के सदस्य डॉ. लक्ष्यराजसिंह मेवाड़ को अपना ब्रांड एंबेसडर बनाया है। राज्यपाल कलराज मिश्र के पर्यटन सलाहकार डॉ. लक्ष्यराजसिंह को ताज समूह ने भारतीय पर्यटन, कला व संस्कृति को बढ़ावा देने और भारतीय विरासत के संरक्षण के लिए अपना ब्रांड एंबेसडर बनाया है। ताज होटल्स समूह द्वारा उदयपुर, जयपुर, जोधपुर, जैसलमेर, ग्वालियर, हैदराबाद, वाराणसी और मुंबई जैसे प्रमुख ऐतिहासिक नगरों में भी आलीशान होटल संचालित हैं, जो देश-दुनिया में प्रसिद्ध हैं। उल्लेखनीय है कि डॉ. लक्ष्यराजसिंह मेवाड़ एचआरएच ग्रुप ऑफ होटल्स के एग्जीक्यूटिव डायरेक्टर हैं, जिन्हें बतौर होटेलियर लंबा अनुभव प्राप्त है और लंबे समय से समाज सेवा में सक्रिय हैं।

प्रो. सारंगदेवोत करेंगे वैज्ञानिक परियोजनाओं का मूल्यांकन

उदयपुर (ह. सं.)। भारत सरकार के डिपार्टमेंट ऑफ साइंस एवं टेक्नोलॉजी ने जनार्दनराय नागर राजस्थान विद्यापीठ के कुलपति कर्नल प्रो. एस.एस. सारंगदेवोत की कम्प्यूटर विज्ञान और इनफार्मेशन टेक्नोलॉजी में विशेषज्ञता को ध्यान में रखते हुए उन्हें नए वैज्ञानिक कार्यक्रम व योजनाओं के निर्माण तथा वर्तमान वैज्ञानिक परियोजनाओं के मूल्यांकन व परिवीक्षण हेतु विषय-विशेषज्ञ के रूप में संलग्न किया गया है। डीएसटी के वरिष्ठ निदेशक राजकुमार शर्मा ने प्रो. सारंगदेवोत की शिक्षा व वैज्ञानिक शोध में प्रभावी बौद्धिक क्षमता, दक्षता और असाधारण शैक्षणिक सूझबूझ द्वारा नयी तकनीक के प्रयोग को बढ़ावा देने, अपनी गूढ़ चिंतनशीलता और प्रतिबद्धता से विज्ञान और तकनीक को उन्नत करने की मान्यता के फलस्वरूप दिया है। वे नेशनल सुपर कंप्यूटिंग मिशन जैसी महत्वपूर्ण परियोजना में भी पर्यवेक्षण करेंगे।

ज्ञातव्य हो कि प्रो. सारंगदेवोत शिक्षण, अनुसंधान, उद्योग, विस्तार कार्यक्रमों और प्रशासनिक कार्यों का 33 वर्षों से अधिक का विशिष्ट अनुभव रखते हैं। वे प्रबंधन कौशल, विश्लेषणात्मक कौशल और नेतृत्व क्षमता से धनी हैं। पचास से अधिक शोध पत्रिकाओं और कई अंतरराष्ट्रीय/राष्ट्रीय सम्मेलनों के संपादकीय बोर्ड के सदस्य रहते हुए उनके अंतरराष्ट्रीय/राष्ट्रीय स्तर की विभिन्न शोध पत्रिकाओं एवं सम्मेलन कार्यवाहियों में 150 से अधिक शोधपत्र प्रकाशित हो चुके हैं। वे अनेक व्याख्यान दे चुके हैं। उनकी 13 पुस्तकें और 5 मोनोग्राफ प्रकाशित हो चुके हैं। उन्होंने अपने नाम से 25 पेटेंट्स का पंजीकरण करवाया है तथा 6 पेटेंट व डिजाईन ग्रांट भी हो चुके हैं। उनके कई कॉपीराइट भी स्वीकृत हैं। उनके मार्गदर्शन में 38 शोध ग्रन्थ (पीएच.डी.) जमा हो चुके हैं और 9 शोधकर्ता अभी पीएच. डी. कर रहे हैं।

बाजार / समाचार

जिंक फुटबॉल अकादमी एआईएफएफ अंडर-17 यूथ लीग के नॉकआउट राउंड के लिए क्वालीफाई

उदयपुर (ह. सं.)। हिंदुस्तान जिंक की सीएसआर पहल जिंक फुटबॉल अकादमी ने ग्रुप एच में अपराजित रहने के बाद प्रतिष्ठित एआईएफएफ अंडर-17

यूथ लीग के नॉकआउट दौर के लिए क्वालीफाई कर लिया है। राजस्थान यूनाइटेड एफसी, बड़ौदा फुटबॉल अकादमी, एआरए एफसी गुजरात और स्पोर्ट्स अथॉरिटी ऑफ गुजरात के साथ, जिंकसिटी, जावर स्थित अकादमी ने छह मैच जीते और दो ड्रा रहे। पूरे लीग में 41 गोल किए। उन्होंने सभी आठ ग्रुप मैचों में अपने खिलाफ सिर्फ एक गोल होने दिया।

पूर्व राजस्थान स्टेट लीग चैंपियंस ने राजस्थान यूनाइटेड एफसी के खिलाफ दो गोल रहित ड्रॉ खेले। उन्होंने बड़ौदा एफए को 4-0 (घरेलू) और 4-1 (बाहर) से हराया; एआरए एफसी गुजरात 10-0 (घरेलू) और 4-0 (बाहर); गुजरात खेल प्राधिकरण 11-0 (घरेलू) और 8-0 (बाहर) से पराजित किया। जिंक फुटबॉल अकादमी के स्ट्राइकर प्रेम हंसदक तीन हैट्रिक सहित 16 गोल के साथ लीग के शीर्ष स्कोरर हैं। आशीष मायला ने अपने नाम 10 सहायता दर्ज कीं। जिंक फुटबॉल अकादमी अब नॉकआउट राउंड के लिए शिलांग, मेघालय की यात्रा करेगा जहां प्रत्येक समूह के सर्वश्रेष्ठ भारतीय युवा क्लब एक-दूसरे का सामना करेंगे।

जेके टायर का लाभ तीन गुणा बढ़ा

उदयपुर (ह. सं.)। जेके टायर एंड इंडस्ट्रीज लि. (जेके टायर) ने वित्त वर्ष 2024 की तीसरी तिमाही के लिए अपने अनऑडिटेड परिणामों की घोषणा कर दी है। इस दौरान कंपनी ने 3700 करोड़ रुपये के शुद्ध राजस्व पर 341 करोड़ रुपये का कर पूर्व लाभ एवं 227 करोड़ रुपये का कर पश्चात लाभ अर्जित किया है। वित्त वर्ष 2024 की तीसरी तिमाही के दौरान में, कंपनी ने 3,700 करोड़ रुपये का शुद्ध राजस्व दर्ज किया और 563 करोड़ रुपये का एबिडिटा हासिल किया, जो कि गत वर्ष की समान अवधि की तुलना में 61 प्रतिशत की उल्लेखनीय वृद्धि दर्शाता है।

चेयरमैन एण्ड मैनेजिंग डायरेक्टर (सीएमडी) डॉ. रघुपति सिंघानिया ने कहा कि जेके टायर में, हम उत्पाद प्रीमियमीकरण, मात्रा विस्तार और हमारे उत्पाद मिश्रण को अनुकूलित करने पर केंद्रित कर लाभदायक विकास हासिल करने के लिए प्रतिबद्ध हैं। सभी उत्पाद श्रेणियों में आर्थिक गतिविधियों में मजबूत गति और सकारात्मक कंज्यूमर सेंटीमेंट्स के चलते मांग का दुष्टिकोण आशावादी बना हुआ है। तिमाही के दौरान निर्यात को प्रभावित करने वाली भू-राजनीतिक गड़बड़ी के कारण वैश्विक मांग परिदृश्य अभी भी चुनौतीपूर्ण बना हुआ है।

एचडीएफसी बैंक ने 300 मिलियन डॉलर जुटाए

उदयपुर (ह. सं.)। एचडीएफसी बैंक लि. ने घोषणा की है कि उसने अपने पहले सस्टेनेबल फाइनेंस बांड इश्यू के माध्यम से 300 मिलियन डॉलर जुटाए हैं। एचडीएफसी बैंक के ग्रुप हेड, ट्रेजरी अरूप रक्षित ने कहा कि यह रेगुलेशन एस बॉन्ड्स के जरिए जुटाए गए 750 मिलियन डॉलर का हिस्सा है। जबकि यूएस ट्रेजरी में 95 बेसिस प्वाइंट्स के प्रसार के साथ तीन साल की अवधि के लिए 300 मिलियन डॉलर जुटाए गए हैं, यूएस ट्रेजरी पर 108 बेसिस प्वाइंट्स के प्रसार के साथ, 5 साल की अवधि के लिए अन्य 450 मिलियन डॉलर जुटाए गए हैं। ये किसी भारतीय जारीकर्ता द्वारा तीन साल के सस्टेनेबल बांड और यूएसडी रेग एस जारी करने के समान आकार के लिए पांच साल के सीनियर अनसिक्योर्ड बांड के लिए हासिल किया गया सबसे सख्त क्रेडिट स्प्रेड हैं। सस्टेनेबल फाइनेंस बांड के माध्यम से जुटाए गए फंड्स को इलेक्ट्रिक वाहनों, एसएमई और अफोर्डेबल हाउसिंग के लिए लोन देने के लिए प्राथमिकता दी जाएगी।

बैंक ऑफ़ बड़ौदा का व्यापक चालू खाता पैकेज शुरू

उदयपुर (ह. सं.)। बैंक ऑफ बड़ौदा ने एक व्यापक चालू खाता पैकेज की शुरुआत की है, जिसमें सात नए चालू खाता उत्पादों को शामिल किया गया है। प्रत्येक चालू खाता उत्पाद को विशेष रूप से विभिन्न व्यावसायिक क्षेत्रों की विशिष्ट व्यावसायिक बैंकिंग आवश्यकताओं को पूरा करने, ग्राहकों को सशक्त बनाने और उनके व्यवसायों को बढ़ावा देने के लिए तैयार किया गया है। नए चालू खाता पैकेज का अनावरण बैंक के कॉर्पोरेट कार्यालय में एमडी और सीईओ देबदत्त चांद द्वारा बैंक के कार्यपालक निदेशकों, सीवीओ और सुश्री शैफाली वर्मा, भारतीय क्रिकेटर और बैंक के ब्रांड प्रचारक की उपस्थिति में किया गया।

बैंक ऑफ़ बड़ौदा के प्रबंध निदेशक देबदत्त चांद ने कहा कि नए लॉन्च किए गए चालू खाते इस प्रकार हैं- बॉब लाइट (व्यक्ति/ एकल स्वामित्व/छोटे व्यवसायों के लिए), बॉब वूमेन पावर (महिला उद्यमियों के लिए), बॉब स्मार्ट (मुख्य रूप से डिजिटल लेन-देन करने वाले व्यवसायों के लिए), बॉब गोल्ड (मध्यम आकार के व्यवसायों के लिए) और बॉब प्लैटिनम, बॉब रोडियम, और बॉब डायमंड (उच्च लेनदेन आवश्यकताओं वाले बड़े व्यवसायों के लिए)।

वेदांता उदयपुर विश्व संगीत महोत्सव 2024 की नई तारीख की घोषणा शीघ्र

उदयपुर (ह. सं.)। संजीव भार्गव, फेस्टिवल डायरेक्टर और सहर के संस्थापक ने घोषणा कि कि सहर द्वारा परिकल्पित और निर्मित वेदांता उदयपुर विश्व संगीत महोत्सव के 2024 संस्करण की तारीखों को परिवर्तित किया गया है। नई तारीख शीघ्र ही घोषित की जाएगी। तारीखों की ताज़ा घोषणा केवल सहर के आधिकारिक @seherindia इंस्टाग्राम पर उपलब्ध होगी, किसी अन्य पर नहीं।

येस सिक्योरिटीज के डीमैट खातों में 6 गुना वृद्धि

उदयपुर (ह. सं.)। येस सिक्योरिटीज ने पिछले 4 वर्षों में उदयपुर में नए डीमैट खाते खोलने की रफ्तार में 6 गुना वृद्धि दर्ज की है। इनमें से 18-30 आयु वर्ग के निवेशकों का योगदान सबसे अधिक है। पिछले एक साल में उदयपुर में डीमैट होल्डिंग्स में 83 प्रतिशत की वृद्धि हुई है जो शहर में निवेशक आधार में मजबूत बढ़ोतरी का प्रतीक है। यह जानकारी प्रेसवार्ता में येस सिक्योरिटीज के मैनेजिंग डायरेक्टर और सीईओ अंशुल अरज़ारे ने दी।

अरज़ारे बताया कि इस वृद्धि को और बढ़ाते हुए येस सिक्योरिटीज को राजस्थान इनवेस्टमेंट प्रमोशन स्कीम (आरआईपीएस) के साथ, आने वाले वर्षों में कई क्षेत्रों में निवेश को बढ़ावा मिलने की उम्मीद है। इस तरह प्रदेश के निवेशकों के लिए एक बेहतर ईको सिस्टम तैयार होगा। मजबूत जीडीपी वृद्धि से घरेलू आय और बचत को बढ़ावा मिलेगा, जो बदले में निवेश को बढ़ावा देगा।

अरज़ारे ने बताया कि येस सिक्योरिटीज ने उदयपुर में महिला निवेशकों का एक मजबूत आधार कायम किया है, जो 2015 से दोगुना हो गया है। येस सिक्योरिटीज के डीमैट खातों की सबसे अधिक संख्या जयपुर में है। इसके बाद जोधपुर और उदयपुर है। कोटा, दौसा और भिवाड़ी में भी निवेशक आधार में क्रमिक वृद्धि देखी गई है। जो राजस्थान की मजबूत विकास क्षमता को प्रमाणित करता है। इस वृद्धि को सपोर्ट करते हुए, कंपनी अपने डिजिटल और फिजिकल इन्फ्रास्ट्रक्चर का निर्माण कर रही है, ताकि निवेशकों को विभिन्न परिसंपत्ति वर्गों और दूसरे बेहतर प्रॉडक्ट्स में अपने ट्रेडिंग प्लेटफॉर्म के माध्यम से निर्बाध रूप से निवेश करने की सुविधा मिल सके।

रैडिसन ब्लू में 'गेम गैलेक्सी' की पेशकश

उदयपुर (ह. सं.)। रैडिसन ब्लू पैलेस रिजॉर्ट एण्ड स्पा, उदयपुर ने अपने परिसर में 'गेम गैलेक्सी' की पेशकश की है। यह गेमिंग के लिये समर्पित एक आर्केड है। ब्राण्ड अपने अतिथियों के अनुभव को बेहतर बनाने और उन्हें मनोरंजन की अभिनव गतिविधियाँ देने के लिये यह सुविधा लेकर आया है।

रैडिसन ब्लू पैलेस रिजॉर्ट एण्ड स्पा, उदयपुर के चेयरमैन और एमडी सोमेश अग्रवाल ने कहा कि हम लगातार अपने मेहमानों की मांगों को आसानी से पूरा करने की कोशिश में रहते हैं। इस उद्देश्य को लेकर हमने गेमिंग ज़ोन की सुविधा दी है। गेम गैलेक्सी हमारी मौजूदा और उच्चस्तरीय इन-हाउस सुविधाओं का विस्तार है। गेमिंग ज़ोन 10,000 वर्गफीट में फैला है। यहाँ बाउलिंग, कार रेसिंग, गन शूटिंग, एयर हॉकी, थंडर हैमर, रोटेटिंग यूएफओ, कैचर्स, इंजन एमपी5 विदाउट स्मोक और बॉल शूटिंग डायनोसोर मिनी जैसी पुरानी पसंद के साथ-साथ स्टारवार्स क्राइसिस गेम विद सिम्युलेशन, वीआर-क्रिकेट और वीआर-360 (9डी) गेम खेलने का बेजोड़ अनुभव देते हैं। मेहमान एडवेंचर वाले आउटडोर गेम्स का मजा भी ले सकते हैं। इनमें बाउंसी, बंजीट्रामपोलिन, बुल राइड, आदि शामिल हैं।

जन औषधि केंद्र संचालित करने की प्रारंभिक मंजूरी मिली : अमित शाह

उदयपुर (ह. सं.)। देश में करीब 2475 प्राइमरी एग्रीकल्चर क्रेडिट सोसाइटी (पीएसीएस) अथवा पैक्स को फार्मास्यूटिकल्स विभाग के अंतर्गत आने वाले फार्मास्यूटिकल और मेडिकल डिवाइसेज ब्यूरो ऑफ इंडिया की तरफ से जन औषधि केंद्र चलाने की प्रारंभिक अनुमति मिल गई है। इनमें से करीबन 617 सहकारी कृषि दिन समितियां को स्टेट ड्रग कंट्रोलर द्वारा ड्रग लाइसेंस दे दिए गए हैं और वे अतिशीघ्र जनऔषधि केंद्र का संचालन शुरू कर पाएंगे। यह जानकारी भारत के सहकारिता मंत्री अमित शाह ने लोकसभा में एक प्रश्न के लिखित उत्तर में दी। उल्लेखनीय है कि अब तक 34 राज्यों/केंद्रशासित प्रदेशों से कुल 4,629 पैक्स/सहकारी समितियों ने जन औषधि केंद्रों के संचालन के लिए ऑनलाइन आवेदन किया है।

अमित शाह ने कहा कि फार्मास्यूटिकल और मेडिकल डिवाइसेज ब्यूरो ऑफ इंडिया (पीएमबीआई) द्वारा 1000 से अधिक पैक्स/सहकारी समितियों को ऑनलाइन प्रशिक्षण प्रदान किया गया है। ग्रामीण नागरिकों तक जेनेरिक दवाओं की पहुंच बढ़ाने के लिए डिपार्टमेंट ऑफ़ फार्मास्यूटिकल (मिनिस्ट्री ऑफ़ केमिकल एंड फर्टिलाइजर) के प्रधानमंत्री भारतीय जन औषधि परियोजना के अंतर्गत सरकार ने पैक्स को जन औषधि केंद्र के संचालन की अनुमति प्रदान की है। जन औषधि केंद्रों के रूप में कार्य करने वाले पैक्स ग्रामीण नागरिकों को सस्ती कीमतों पर गुणवत्तापूर्ण जेनेरिक दवाएं उपलब्ध कराने में सक्षम होंगे, जिनकी कीमत खुले बाजार में ब्रांडेड दवाओं की तुलना में 50-90 प्रतिशत कम हैं। इनमें लगभग 2,000 दवाएं और 300 सर्जिकल आइटम शामिल हैं। पैक्स को अतिरिक्त रोजगार के अवसर और अतिरिक्त राजस्व स्रोत भी मिलेंगे। पैक्स के कम्प्यूटरीकरण के लिए केंद्र प्रायोजित परियोजना के तहत, हार्डवेयर की खरीद, डेटा के डिजिटलीकरण और समर्थन प्रणाली की स्थापना के लिए 28 राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों को भारत सरकार का 488.42 करोड़ रुपये का हिस्सा जारी किया गया है।

अपोलो कैंसर सेंटर सेल थेरेपी पूर्ण करने वाला भारत का प्रथम निजी अस्पताल

उदयपुर (ह. सं.)। अपोलो कैंसर सेंटर ने सेल प्रोग्राम को सफलतापूर्वक पूर्ण किया है। इसे और आगे बढ़ाने के लिए समूह अब 15 वर्ष और उससे अधिक आयु के रोगियों में बी-सेल लिम्फोमा और बी-एक्यूट लिम्फोब्लास्टिक ल्यूकेमिया के उपचार के लिए एक्टालिकैब्टाजीन ऑटोल्यूसेल) से शुरुआत करते हुए 'मेड इन इंडिया' सेल थेरेपी तक एक्सेस(पहुंच) प्रदान करेगा।

अपोलो कैंसर सेंटर, अहमदाबाद में हेमेट-ऑन्कोलॉजी विभाग के मेडिकल सर्विसेज के प्रमुख और मुख्य सलाहकार डॉ. वेलु नायर ने कहा कि व्यावसायिक स्तर पर सेल थेरेपी का उपयोग करके तीन मरीजों का सफल उपचार वास्तव में बी-सेल लिम्फोमा और तीव्र लिम्फोब्लास्टिक ल्यूकेमिया के खिलाफ हमारी लड़ाई में एक महत्वपूर्ण सीमाचिह्न का प्रतिनिधित्व करता है। ये मामले इन चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों का सामना करने वाले रोगियों के लिए नई आशा प्रदान करने में इस परिवर्तनकारी चिकित्सा की प्रभावकारिता और क्षमता को उजागर करते हैं। उन्होंने कहा कि आयातित दवाओं के साथ रोगियों का सफलतापूर्वक इलाज करने के बाद, अब हम स्वदेशी रूप से निर्मित थेरेपी के साथ उनका इलाज करने के लिए तैयार हैं। अपोलो हॉस्पिटल, अहमदाबाद के सीओओ नीरज लाल ने कहा कि एक अग्रणी और लंबी यात्रा शुरू करते हुए, अपोलो कैंसर सेंटर्स ने कैंसर उपचार के क्षेत्र में एक उल्लेखनीय उपलब्धि हासिल की है। सफल उपचारों के साथ, सेल थेरेपी को आगे बढ़ाने के लिए हमारी प्रतिबद्धता अटूट है। इस क्षेत्र में सफलता हासिल करने वाला यह भारत का पहला निजी अस्पताल है। परिवर्तनकारी थेरेपी एक नया मानदंड स्थापित करती है, जो अभूतपूर्व स्वास्थ्य देखभाल के प्रति हमारे समर्पण को और भी मजबूत करती है।

एचडीएफसी बैंक के होम लोन कारोबार का मजबूत प्रदर्शन

उदयपुर (ह. सं.)। भारत के सबसे बड़े निजी क्षेत्र के बैंक, एचडीएफसी बैंक ने अपने होम लोन कारोबार पर एक अपडेट साझा किया, जिसमें बताया गया है कि एचडीएफसी लि. के विलय के बाद इसमें अच्छी वृद्धि देखी गई है। विलय के बाद वृद्धिशील वितरण पर बैंक की बाजार हिस्सेदारी लगभग 18 प्रतिशत से 20 प्रतिशत तक बढ़ गई है। विलय के बाद पहले छह महीनों में इसने अपने होम लोन व्यवसाय में साल-दर-साल मजबूत और लगातार उच्च दोहरे अंक की वृद्धि प्रदर्शित की है। क्रमिक आधार पर, बैंक ने अग्रणी स्थान हासिल किया है क्योंकि इसने 3.6 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की है जो कि होम लोन में अपने सहकर्मियों के बीच सबसे अधिक थी।

अरविंद कपिल, कंट्री हेड - मॉर्गेज बैंकिंग, होम लोन, एलएपी, एचडीएफसी बैंक के अनुसार बैंक की मूल रणनीति फ्रंट एंड पर प्रोसेसिंग के टर्नअराउंड समय में सुधार करना है। विलय के बाद टर्नअराउंड समय लगभग एक तिहाई कम हो गया है। यह पूर्ववर्ती एचडीएफसी लि. की ग्राहकों से व्यक्तिगत रूप से जुड़ने की ताकत के साथ मिलकर बिक्री टर्नओवर और क्रॉस-सेल दोनों के मामले में एक संभावित गेम चेंजर साबित हुआ है। इस रणनीति में स्व-रोज़गार क्षेत्र पर नए सिरे से ध्यान केंद्रित करना शामिल है जो अवसर के आकार को और बढ़ाएगा। विलय के बाद, बैंक ने ऐसे प्रोफाइल के बेहतर मूल्यांकन के लिए बैंकिंग सरोगेट्स के साथ-साथ जीएसटी कार्यक्रमों के माध्यम से अपने उत्पाद बास्केट को पहले ही लॉन्च और विस्तारित कर दिया है।

संस्कृति में साधु संन्यासियों के माहात्म्य पर उच्चस्तरीय संगोष्ठी

भोपाल। जनजाति लोककला एवं बोली अकादमी, मध्यप्रदेश संस्कृति मंत्रालय द्वारा 27 से 29 जनवरी तक संस्कृति में साधु और संन्यासी विषयक अखिल भारतीय संगोष्ठी रखी गई जिसमें देशभर से आए विद्वानों ने अनेक शोधपत्र पढ़े और युगयुगीन सन्दर्भों में साधु सज्जनों की भूमिका को रेखांकित किया। गौरांजरी सभागार, रवीन्द्र भवन भोपाल में आयोजित इस समारोह का उद्घाटन अयोध्या के

आचार्य मिथिलेश नंदिनी शरण ने किया। उन्होंने कहा कि संस्कृति में साधुओं की सेवाएं अथक यात्रा में चोटिल पांवों पर लगाई जाने वाली उन पीसी पत्तियों की तरह हैं जो अपना स्वरूप खो बैठती हैं लेकिन, वे बहुत उपयोगी होते हैं। उन्होंने चौमासा के साधु अंक का विमोचन किया और इस आयोजन को देश में एक नई पहल कहा। दूसरे दिन के प्रमुख व्याख्यान में डॉ. श्रीकृष्ण 'जुगनू' ने कहा कि भारत में सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक और आर्थिक क्रान्ति में साधु और संन्यासी केन्द्र में रहे हैं। आरण्यक काल से लेकर जैन, बौद्ध और अन्य दर्शन कालों में साधुओं की अहम भूमिका दिखाई देती है।

समापन अवसर पर विचारक जे. चन्द्र कुमार ने मानवीय मूल्यों के उत्थान और राष्ट्रीय भावना की भव्यता में साधु-संन्यासियों का मार्मिक चित्रण किया। संगोष्ठी में पहले दिन शास्त्र पुराणोक्त और लोकोक्त साधु संन्यासी में आशय, प्रकार, लक्षण, दीक्षा और तप दीक्षिका के विधान, संस्कार, दार्शनिकता,मत तथा सिद्धांत और परस्पर अध्याहार विषय पर चर्चा रही। दूसरे दिन साधु की परम्परायें और इतिहास में शैव परम्परा, वैष्णव परम्परा, जैन बौद्ध, सिक्ख, नाथ, सिद्ध तथा अन्य लोक धाराओं पर विमर्श हुआ। अन्तिम दिवस 29 जनवरी को साधु-संन्यासियों का वहिरंग जिसमें आम्नाय, अखाड़े, मढ़, मढ़ी, दावा, श्रृंगार, जीवन-शैली, आहार, भेष-भूषा, पारिवारिक शब्दावली और भाषिक वैशिष्ट्य आदि विभिन्न विषयों पर प्रमाणित सारगर्भित शोध-पत्र प्रस्तुत हुये। विद्वान निदेशक प्रो. धर्मेन्द्र पारे ने भारतीय संस्कृति में साधु संन्यासी की सांस्कृतिक विरासत पृष्ठभूमि और मानवीय मूल्यों व राष्ट्रीय विकास आवश्यकता पर एक ऐसी धरोहर को पुनर्स्थापित पुनर्जीवित किया गया जो अविस्मरणीय ज्ञान का प्रवाह है जिससे ही हमारी संस्कृति सभ्यता और विचारधारा सर्वदा पुनर्स्थापित रहेगी। **- डॉ. श्रीकृष्ण 'जुगनू'**

चित्र प्रदर्शनी में छात्राओं के भाव हुए अभिव्यक्त

उदयपुर (ह. सं.)। राजकीय मीरा कन्या महाविद्यालय, उदयपुर में चित्रकला विभाग द्वारा स्नातक स्तर की छात्राओं द्वारा बनाए गए चित्रों की दो दिवसीय प्रदर्शनी

का उद्घाटन महाविद्यालय प्राचार्य प्रो. अंजना गौतम ने दीप प्रज्वलित कर किया। प्रदर्शनी में 80 छात्राओं द्वारा बनाए गए चित्र, स्केच एवं मिट्टी के अलंकृत दीपक आदि प्रदर्शित किए गए।

प्राचार्य ने कहा कि सभी छात्राओं ने चित्रकला के तत्व एवं संयोजन के सिद्धांतों को ध्यान में रखते हुए अपने भावों को अभिव्यक्त किया है। ऐसी ही सृजन प्रक्रिया से मानसिक और सर्वांगीण विकास संभव है। चित्रकला विभागाध्यक्ष प्रो. दीपक भारद्वाज ने सभी का स्वागत करते हुए बताया कि प्रदर्शनी में प्रो. कहानी भानावत प्रो. मनीषा चौबीसा, श्रीमती पुष्पा मीणा, डॉ. रामसिंह भाटी, डॉ. दीपक सालवी का विशेष योगदान रहा। इस अवसर पर संकाय सदस्य प्रो. श्यामसुंदर कुमावत, प्रो. मंजू बारूपाल, प्रो. राजकुमार बोलिया, प्रो. अशोक सोनी, सह आचार्य डॉ. भावशेखर आदि ने छात्राओं का उत्साहवर्धन किया।

प्राकृत रत्नाकर का कन्नड़ भाषा में अनुवाद

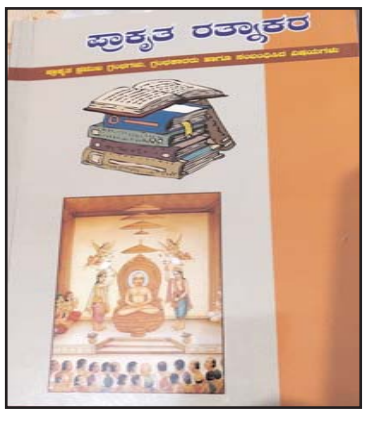

उदयपुर। प्रो. प्रेमसुमन जैन द्वारा लिखित हिंदी पुस्तक 'प्राकृत रत्नाकर' का श्रीमती कुसुमा सी. पी. ने कन्नड़ भाषा में अनुवाद किया है।

पुस्तक का कन्नड़ संस्करण श्रवणबेलगोला से 2023 में प्रकाशित हुआ है। विशेष बात यह है कि कर्नाटक के प्राकृत पढ़ने वाले 22 विद्यार्थियों ने स्वयं अनुदान देकर इस संस्करण को प्रकाशित कराया।

दो कविताएं

(1) मृत्योन्मुखी के सामने

मैं रह नहीं पाऊंगी
एक दिन देख लेना
अकाल मौत मुझे
ले जायगी एक दिन देख लेना
जो कुछ भी घट रहा है
नहीं घटेगा
किसी एक दिन देख लेना
मैं बचूंगी नहीं बिना तुम्हारे देख लेना।

(2) प्रताप बंध

तीन पहाड़ की
तलहटी में बंद
नीला-कच्च
प्रताप-बंध।
सौ-सौ सूरज चमकते दिनभर इसमें
रात डूब जाता जैसे
ब्रम्हराकशस होकर कृषकाय।
तब चांदनी नाचती है,
दौड़ती हवा/ दौड़ते
काली तुलसी के बिरवा
तेज-गंध के साथ।
लम्बी छाया लिए
थमें हैं अपनी जगह
धौक और पलाश।
तारों की छांह ढले
कालिमा को चीर
आसमान में उतरती है/ तिरछी
रेखाएं-लाल।
पनडुबी कूदती है पानी में
सूरज के साथ।

- रेवतीरमण शर्मा

टीबी के कारण हुए लकवे का सफल उपचार

उदयपुर (ह. सं.)। गीतांजली मेडिकल कॉलेज एवं हॉस्पिटल में मस्तिष्क में टीबी के कारण हुए लकवे

का सफल उपचार न्यूरोलॉजिस्ट डॉ निशांत अश्वनी, डॉ. ध्रुव वाजा, डॉ. कल्पेश, ईएनटी विभाग, आईसीयू टीम द्वारा किया गया।

डॉ. निशांत अश्विनी ने बताया कि बांसवाड़ा निवासी 30 वर्षीय रोगी को सिर में दर्द, बुखार, कान से पानी आना, उल्टी और खून युक्त बलगम वाली खांसी की शिकायत के चलते भर्ती कराया गया। जांचों में पता चला कि रोगी का बांया कान बहता था, कान के परदे में छेद था तथा कान के पीछे की हड्डी में इंफेक्शन हो गया। एमआरआई में रीड की हड्डी में सूई डालकर पानी बाहर निकला गया तो मस्तिष्क में टीबी का पता चला। टीबी के कारण दिमाग में लकवे के भी लक्षण आ गये थे। इस पर विशेषज्ञों ने मरीज का आईसीयू में इलाज किया गया। रोगी अब स्वस्थ है।

सामर होंगे भाजपा से लोकसभा संयोजक

उदयपुर (ह. सं.)। भाजपा प्रदेशाध्यक्ष सी. पी. जोशी ने लोकसभा चुनाव के मद्देनजर राज्यभर में पार्टी की ओर से संयोजक, प्रभारी एवं सहप्रभारी बनाए हैं। इनमें उदयपुर से प्रमोद सामर को संयोजक, हेमंत मीणा को प्रभारी व महेश शर्मा को सहप्रभारी बनाया है।

राजमार्गों के विकास से औद्योगिक विकास को मिलेगी गति : गडकरी

2500 करोड़ से अधिक की सड़क परियोजनाओं का लोकार्पण-शिलान्यास

उदयपुर (सुजस)। केन्द्रीय सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी ने जयपुर रिंगरोड के द्वितीय चरण के लिए 5 हजार करोड़ की मंजूरी देने की घोषणा की है। रिंग रोड परियोजना के अंतर्गत 92 किलोमीटर के 6 लेन ग्रीनफील्ड हाईवे का काम 3 महीने में प्रारम्भ किया जाएगा। गडकरी 12 फरवरी को मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा की उपस्थिति में उदयपुर में 2500 करोड़ रूपए से अधिक की लागत की 17 सड़क परियोजनाओं के लोकार्पण-शिलान्यास समारोह को सम्बोधित कर रहे थे। उन्होंने इस अवसर पर जोधपुर एलिवेटेड रोड परियोजना को मंजूरी देने की घोषणा भी की। उन्होंने कहा कि राजस्थान में राष्ट्रीय राजमार्गों के विकास से यहां के सीमेंट, मार्बल और अन्य उद्योगों का तेजी से विकास होगा और और राज्य प्रगति की नई ऊंचाइयां को छुएगा। गडकरी ने कहा कि राज्य सरकार राजस्थान को रेलवे फाटक मुक्त बनाने की दिशा में योजना तैयार करे, केन्द्र सरकार इसमें पूरी मदद करेगी।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में देश और प्रदेश 21वीं सदी की ओर अग्रसर है। डबल इंजन की सरकार से प्रदेश में विकास की गति चौगुनी हुई है। उन्होंने कहा कि 2500 करोड़ रुपए से अधिक की सड़कों एवं राजमार्गों के लोकार्पण एवं शिलान्यास से प्रदेश का सड़क तंत्र सुदृढ़ होगा। उप मुख्यमंत्री एवं सार्वजनिक निर्माण मंत्री श्रीमती दिया कुमारी ने कहा कि पूर्ववर्ती सरकार ने सड़कों के निर्माण और उन्नयन में क्षेत्रीय असंतुलन पैदा किया। इस भेदभाव का निदान करने के लिए हमारी सरकार ने स्टेट रोड फंड में 1500 करोड़ रुपए का अतिरिक्त प्रावधान किया है।

कार्यक्रम में जनजाति क्षेत्रीय विकास मंत्री बाबूलाल खराड़ी, सहकारिता राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) गौतम कुमार, वन राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) संजय शर्मा, सांसद अर्जुनलाल मीणा, सी. पी .जोशी, सुखबीरसिंह जौनपुरिया, सुभाषचन्द्र बहेड़िया, देवजी पटेल, विधायक उदयलाल डांगी, ताराचंद जैन, पुष्करलाल डांगी, चंद्रभानसिंह चौहान, अर्जुनलाल जीनगर, श्रीमती दीप्ति किरण माहेश्वरी, फूलचंद मीणा, शंकरसिंह रावत एवं उदयलाल भडाणा सहित अन्य गणमान्य अतिथि मौजूद रहे।

जिंक को मिला सस्टेनेबिलटी ईयरबुक में स्थान

उदयपुर (ह. सं.)। वेदांता समूह की कंपनी और भारत में जिंक, सीसा और चांदी का सबसे बड़े और एकमात्र एकीकृत उत्पादक हिंदुस्तान जिंक लि. को एसएंडपी ग्लोबल सस्टेनेबिलिटी ईयरबुक 2024 में धातु और खनन क्षेत्र में शीर्ष 1 प्रतिशत ईएसजी स्कोर में शामिल किया गया है। यह मान्यता सस्टेनेबिलिटी ईयरबुक में कंपनी को लगातार सातवीं बार दी गयी है जो सस्टेनेबल संचालन के प्रति कंपनी प्रतिबद्धता को दर्शाता है। एसएंडपी ग्लोबल सस्टेनेबिलिटी ईयरबुक को व्यावसायिक सस्टेनेबिलिटी के लिए सबसे व्यापक डेटाबेस में से एक माना जाता है। इसका उद्देश्य दीर्घकालिक विकास चालकों पर ध्यान देने के साथ कॉर्पोरेट स्थिरता प्रथाओं का प्रदर्शन करने वाली कंपनियों की सराहना करना है। शीर्ष 1 प्रतिशत में हिंदुस्तान जिंक का समावेश धातु और खनन क्षेत्र में एसएंडपी ग्लोबल के 2023 कॉर्पोरेट स्थिरता आकलन में 85 अंकों के उच्चतम सीएसए स्कोर के बाद हुआ है।

डॉ. खण्डेलवाल ने अतिरिक्त महाधिवक्ता का पदभार ग्रहण किया

उदयपुर (ह. सं.)। उदयपुर संभाग के अधिवक्ता एवं बार एसोसिएशन के पूर्व अध्यक्ष डॉ. प्रवीण खण्डेलवाल ने जोधपुर हाईकोर्ट में बसंत पंचमी के शुभमुहूर्त में अतिरिक्त महाअधिवक्ता का पदभार ग्रहण किया। जोधपुर के महाधिवक्ता भवन में स्थित चेम्बर में ठीक दस बजे विधि विधान के साथ डॉ. खण्डेलवाल को पदभार ग्रहण कराया गया। इससे पूर्व खण्डेलवाल ने मुख्य न्यायाधिपति मदनमोहन श्रीवास्तव की पीठ में अपनी उपस्थिति दर्ज कराई।

इस अवसर पर डॉ. खण्डेलवाल ने कहा कि वंचित वर्ग एवं सभी को सस्ता, सुलभ एवं समय पर न्याय मिले यह मेरी प्राथमिकता होगी। पदभार ग्रहण के दौरान विधि प्रकोष्ठ के सहसंयोजक व जोधपुर हाईकोर्ट के पूर्व अध्यक्ष नाथुसिंह राठौड़, रणजीत जोशी, राजेश पंवार सहित समस्त कार्यकारिणी और जोधपुर हाईकोर्ट के वरिष्ठ अधिवक्तागण मौजुद थे। उदयपुर से बार एसोसिएशन के पूर्व अध्यक्ष महेंद्र नागदा, अधिवक्ता परिषद् के जिला संयोजक मनीष शर्मा, चंद्रभान सिंह, दिनेश गुप्ता, अक्षय शर्मा, अजय आचार्य, सोहन डांगी, सुरेंद्रसिंह राठौड़, तुषार मोड़, अदिति मोड़, रामसिंह रावल, लव जैन, धमेन्द्र सोनी, रतनसिंह राठौड़, सलूम्बर बार एसोसिएशन के अध्यक्ष राकेश प्रजापत, राजेन्द्र रेगर, राजेन्द्र जैन, नगर निगम के पूर्व अध्यक्ष विजेष भलवाड़ा उपस्थित थे।

असंग्रही गांधी अहिंसा के मनोबल से महात्मा हो गए

– आचार्य महाप्रज्ञ –

जैनदर्शन ने सूक्ष्मता से अहिंसा का प्रतिपादन किया और महात्मा गांधी ने सूक्ष्मता से उसका जीवन में प्रयोग किया। सत्य की गहराई में जाने पर सब को एक ही बात मिलती है। वहां न आग्रह होता है और न पकड़। जो व्यक्ति सत्य की गहराई में जाते हैं उन सबकी अनुभूति एक होती है। गांधीजी ने अहिंसा का प्रयोग किया। राजनीति के क्षेत्र में अहिंसा का प्रयोग करने वाला इतिहास में गांधीजी के अलावा दूसरा कोई नहीं मिलता।

जहां परिग्रह होता है वहां भय आ जाता है। अभय वहीं होता है जिसके पास संग्रह नहीं है। अभय वहीं होता है जो अहिंसक होता है। जिसे प्राणों का भय सताता है, वह अहिंसक नहीं होता। महात्मा गांधी असंग्रही थे, इसलिए उतने ही अभय थे। उनको मौत की चुनौती मिली, फिर भी वे अपने लक्ष्य से विचलित नहीं हुए। एक व्यक्ति ने पास आकर कहा –'मैं आपको मारने के लिए आया हूं।' उन्होंने कहा, मैं तैयार हूं। जिसके मन में भय नहीं होता उसका पराक्रम जाग जाता है। अहिंसक वह होता है जो अपने मन को ऋजु बना लेता है और नमस्कार करने वाले और दु:ख देने वाले दोनों पर समदृष्टि रखता है। वस्त्र को एकत्वपूर्ण बनाने के लिए धागा आवश्यक है वैसे ही एक-दूसरे से जोड़ने के लिये समता की आवश्यकता है। गांधीजी की प्रवृत्ति के पीछे समता की दृष्टि थी। समता का विस्तार अहिंसा का विस्तार था। जैनधर्म का मूल है- अहिंसा, सत्य, अनाग्रह एवं अनेकांतवाद। सामान्यत: व्यक्ति अपनी भूल को स्वीकार नहीं करता, बल्कि अड़ जाता है, क्योंकि वहां बड़प्पन और मान-अपमान का प्रश्न खड़ा हो जाता है। भूल को स्वीकार न करना ओछेपन की बात है।

जैनधर्म और महात्मा गांधी के सम्बन्ध की बात आती है तो अहिंसा उनके सम्बन्ध का सूत्र बनता है। जैनदर्शन ने सूक्ष्मता से अहिंसा का प्रतिपादन किया और महात्मा गांधी ने सूक्ष्मता से उसका जीवन में प्रयोग किया। जब गांधी विदेश जाने लगे तो उनकी माता उन्हें जैन साधुग्रों के पास ले गयी और मद्य-मांस का त्याग कराया। संकल्प लेने के बाद उनको विदेश भेजा। जो व्यक्ति सत्य का शोधक होता है वह सब जगह का सत्य स्वीकार करता है। सब लोग उसे अपना मानते हैं। सब कहते हैं, हमारे धर्म का पालन कर रहा है। क्योंकि सत्य सब का एक होता है। वे गीता के आधार पर अपने जीवन को चलाते थे। फिर भी कुछ बातें ऐसी हैं जो वहां नहीं, जैन धर्म में ही मिलेंगी।

एक व्यक्ति ने अपनी खाट को घसीटा। गांधीजी ने देखा तो उसे रोक दिया और कहा- 'ऐसा क्यों करते हो? न जाने कितने जीव घसीटने से मरे होंगे! बिना प्रयोजन किसी भी प्राणी को क्यों कष्ट दिया जाए?' उनका विवेक जागृत था, इसलिए वे सूक्ष्म हिंसा पर भी ध्यान देते थे। अनिवार्य हिंसा को भी वे हिंसा ही मानते थे। कइयों ने आपातकालीन स्थिति में भी हिंसा को हिंसा ही माना। एक बार प्रश्न आया-'बन्दर खेती को खा रहे हैं, क्या उन्हें मार देना चाहिए?' गांधी ने उत्तर दिया- 'यह बात मनुष्य के हित की दृष्टि से आती है। मारना हिंसा है। हिंसा की विवशता हो सकती है पर वह अहिंसा कदापि नहीं है।' यही दृष्टिकोण जैनधर्म का है जो उनको श्रीमद् रायचन्द से मिला था ।

गाँधीजी ने कहा है- 'मैं किसी को गुरु नहीं बना सका परन्तु मेरे जीवन में अधिक प्रभाव श्रीमद् रायचन्द का रहा है। वे बड़े अनुभवी थे। अध्यात्मयोगी थे।' गांधीजी उनसे सलाह लेते थे। जहां अध्यात्म की भावना जागृत हो जाती है वहाँ भेद दिखाई नहीं देता। सत्य की गहराई में जाने पर सब को एक ही बात मिलती है। वहां न आग्रह होता है और न पकड़।

जो व्यक्ति सत्य की गहराई में जाते हैं उन सबकी अनुभूति एक होती है। फिर वह चाहे श्रीमद् रायचन्द हों या कोई अन्य। श्रीमद् रायचन्द पहुंचे हुए व्यक्ति थे। उन्होंने गांधीजी को दृष्टि दी। गांधीजी ने अहिंसा का प्रयोग किया। राजनीति के क्षेत्र में अहिंसा का प्रयोग करने वाला इतिहास में गांधीजी के अलावा दूसरा कोई नहीं मिलता। अंग्रेजी शासन के साथ लड़कर देश को स्वतंत्र बनाना और अंग्रेजों से घृणा न करना बहुत बड़ी अहिंसा है।

मकान मालिक एक किराएदार को निकालता है तो कितना आक्रोश और घृणा फैलाता है। वहां दूसरी ओर अंग्रेजों को भारत से हटाने के लिये भी प्रेम की बातें करना महान् व्यक्तित्व का लक्षण है। गांधीजी ने दो बातें सिखाईं- आत्मसंयम और दूसरों के साथ प्रेम करना। लोग विपरित करते हैं। अपने लिये स्वार्थ और दूसरों के साथ घृणा करते हैं। घृणा दोनों के बीच दीवार कर देती है। वह तुम्हें नहीं समझ सकेगा और तुम उसको नहीं समझ सकोगे।

प्रेम करने वाला दूसरों के ह्रदय को जोड़ लेता है। वे विरोधियों के साथ भी प्रेम करते थे पर अन्याय को नहीं सहते थे। अन्याय के लिए प्रतिपल तैयार रहते थे। मनुष्य की सबसे बड़ी दुर्बलता है भय। हम जानते हैं यह अच्छा है फिर भी उसे नहीं कर पाते। भय रहता है कि समाज क्या कहेगा। गांधीजी दक्षिण में आये। उन्होंने यहां की गरीबी को देखा। मन में चिन्तन चला हम इतना वस्त्र पहनते हैं, इनके पास तन ढाँकने को पूरा वस्त्र नहीं है। तत्काल लंगोटी स्वीकार करली। उन्होंने यह नहीं सोचा कि लोग क्या कहेंगे? सम्राट से मिलने के लिए जब विदेश गए तो वही वेशभूषा थी। जब उनसे वेश बदलने को कहा गया तो उन्होंने कहा – 'मैं जिस देश का प्रतिनिधि बनकर आया हूं, वहां गरीबी है। करोड़ों लोग इस वेश में रहते हैं, फिर मुझे क्यों नहीं रहना चाहिए?' उसी वेश में सम्राट से मिले। उन्हें जरा भी भय नहीं था कि दूसरे उन्हें क्या समझ रहे हैं।

अधिकांश मनुष्य अपनी प्रतिष्ठा के भय से अपनी वेशभूषा में परिवर्तन कर लेते हैं। जहां भय रहता है वहां विकास नहीं होता। भगवान महावीर ने अभय पर बल दिया। जो जिनकल्पी साधु होता है वह प्रारम्भ में अभय की साधना करता है। पहले वह रात में अकेले बैठकर भय पर विजय प्राप्त करता है फिर रात को क्रमश: चौराहे पर, शून्य ग्रह में और श्मशान में जाकर ध्यान करता है। भय पर विजय प्राप्त कर वह जिनकल्पी बनता है। एकान्त में ध्यान करने का उद्देश्य भय पर विजय प्राप्त करना है। भय बाहर से नहीं, भीतर से आता है और अपनी कल्पना से आता है। भगवान महावीर ने कहा – 'जो अभय को नहीं जानता, वह धर्म को भी नहीं जानता। अहिंसा और कायरता में विरोध है जैसे पानी और अग्नि में है । जो आहिंसक नहीं वह अभय नहीं हो सकता' इस व्याप्ति पर बल दिया। परिग्रह भय है, हिंसा है। मेरे पास परिग्रह है तो भय लगेगा। भय से हिंसा की भावना आएगी।

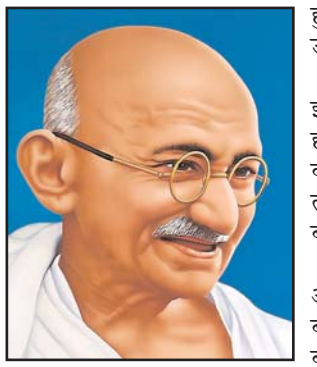

दो सन्यासी जा रहे थे । एक गुरु था, दूसरा शिष्य। शिष्य को कहीं से सोने का एक पाशा मिल गया। उसने उठाकर झोली में डाल लिया। थोड़ी दूर चला, झोली को देखने लगा। बार-बार झोली को संभालता और आगे चलता क्योंकि उसका मन सोने में अटका हुआ था। गति में शिथिलता आ गई। गुरु के मन में संदेह जागा। गुरु ने पूछा- 'झोली में क्या है? बार-बार इसे क्यों देखता है?' उसने उत्तर दिया- 'कुछ नहीं है।' फिर दोनों आगे चलने लगे।

एक जगह ठहरे। शिष्य किसी कार्यवश दूसरे स्थान पर गया। झोली को वहीं भूल गया। पीछे से गुरु ने झोली में टटोला। देखा तो सोने का पाशा पड़ा था। गुरु ने सोचा, बीमारी यही है। तत्काल गुरु ने उसको एक ओर फैंक दिया। शिष्य आया। सबसे पहले झोली को सम्भाला। देखा तो पाशा नहीं था। घबरा गया, मुंह उतर गया।

गुरु ने पूछा- 'क्या हुआ?' शिष्य ने कहा- 'मेरी चीज नहीं मिल रही है।' गुरु ने कहा – 'मैने उसको फैंक दिया है।' शिष्य ने पूछा – 'कहाँ?' गुरु ने कहा –'कुए में। अब वह तुम्हें नहीं मिलेगी। उसके आने से एक दिन में तेरा स्वभाव बदल गया।' जहां परिग्रह होता है वहां भय आ जाता है। अभय वहीं होता है जिसके पास संग्रह नहीं है। अभय वहीं होता है जो अहिंसक होता है। जिसे प्राणों का भय सताता है, वह अहिंसक नहीं होता।

महात्मा गांधी असंग्रही थे, इसलिए उतने ही अभय थे। उनको मौत की चुनौती मिली, फिर भी वे अपने लक्ष्य से विचलित नहीं हुए। एक व्यक्ति ने पास आकर कहा –'मैं आपको मारने के लिए आया हूं।' उन्होंने कहा, मैं तैयार हूं। जिसके मन में भय नहीं होता उसका पराक्रम जाग जाता है। अंग्रेजी साम्राज्य इतना बड़ा था कि उनके राज्य में सूर्य अस्त नहीं होता था। गांधीजी के पास शस्त्र नहीं थे केवल अहिंसा का मनोबल था। उसके आधार पर उन्होंने अंग्रेजों के साथ लड़ाई लड़ी ।

वह अहिंसक नहीं है जो दूसरों की अवहेलना करता है। जिसमें प्राणी मात्र के प्रति समानता की दृष्टि नहीं है वह रूढ़ अहिंसक है। चींटी के प्रति प्रेम दिखाए और बड़ों से घृणा करे, क्या वह अहिंसक है? अहिंसक वह होता है जो अपने मन को ऋजु बना लेता है और नमस्कार करने वाले और दु:ख देने वाले दोनों पर समदृष्टि रखता है।

सुरेन्द्र कोशिक ने भगवान महावीर के पैरों में नमस्कार किया और चण्ड कोशिक सर्प ने पैरों में लिपट कर कई बार डंक मारे पर महावीर समभाव में थे। चण्ड कोशिक भयंकर सर्प था। उसकी दृष्टि में विष था। सूर्य की ओर देखकर जब वह फुफकार मारता तो दूर तक जहर फेंकता था। उसने भगवान महावीर को कई बार काटा। तीव्र वेदना हुई, फिर भी उन्होंने समभाव से उसको सहा।

साधारण व्यक्ति के लिए इस प्रकार सहना असम्भव है। हमें ज्ञात हो जाए कि अमुक व्यक्ति हमारा अनिष्ट कर रहा है तो उसके प्रति हमारी भावना बदल जाती है।

भगवान महावीर तो उसे अज्ञानी समझकर उसका ह्रदय बदलना और उसे अहिंसक बनाना चाहते थे। इसीलिए सुरेन्द्र और चण्ड कोशिक दोनों के प्रति उनके मन में समान भावना प्रवाहित हो रही थी। जिनके मन में अहिंसा की भावना जाग जाती है उसके लिए यह असंभव नहीं है। अपना अनिष्ट करने वाले के साथ भी मीठा व्यवहार करना भगवान महावीर का मूलमंत्र था जो गांधीजी के जीवन में मिलता था। गांधीजी ने अहिंसा की साधना में अपने को समर्पित कर दिया था। जो समर्पित नहीं होता उसके मन में तर्क उठता है कि मैं उसके प्रति हित की बात क्यों सोचूं। जहां समर्पण नहीं होता वहां अनेक प्रश्न उठते हैं।

गुरु ने शिष्य से कहा- 'जाओ, सांप को माप कर आओ।' तर्कशील सोचेगा, शिष्य को मारने का उपाय है परन्तु शिष्य के मन में तर्क नहीं था। उसने युक्ति से माप कर बता दिया। डेढ़ हाथ लम्बा है। गुरु ने फिर कहा- 'फिर जाओ, सांप के दांत गिनकर आओ।' शिष्य गया। सांप के दांत गिनने का प्रयत्न किया तो उसने डंक मार दिया। गुरु ने कहा- 'आ जाओ। काम हो गया।' शिष्य को कम्बल ओढ़ाकर सुला दिया। शिष्य के शरीर से कीड़े निकलते गए और वह स्वस्थ हो गया। गुरु जानते थे कि इस रोग की यही चिकित्सा है। शिष्य गुरु के प्रति समर्पित था।

जिसके मन में अहिंसा नहीं होती है वह अनिष्टकर्त्ता के प्रति घृणा से भर जाता है। जिसके मन में हिंसा होती है उसे बाहर सर्वत्र हिंसा ही हिंसा दीखती है। दो व्यक्ति बात करते हैं तो सन्देह होता है कि मेरे विषय में ही बात करते हैं। इस मनोवृत्ति का कोई इलाज नहीं है। एकत्व की भावना होने से हिंसा का मार्ग छूट जाता है।

गांधीजी ने जिस सिद्धान्त का आलम्बन लिया वह था- हर व्यक्ति में ईश्वरत्व विद्यमान है। जैनधर्म में भी यही है-तुमंसि णाम सच्चेव, जं हतव्वति मन्नसि।' जिसको तू मारता है वह तू ही है। दूसरा कोई नहीं है।

जब यह सिद्धान्त आयेगा तो व्यक्ति दूसरों को क्यों मारेगा! जबकि दूसरों को मारना स्वयं मारना है। व्यक्ति दूसरों के प्रति अन्याय कर सकता है, पर अपने प्रति अन्याय नहीं करना चाहता। दूसरों को ठग सकता है पर अपने पुत्र को ठगना नहीं चाहता।

ह्यह्यजहां अहिंसा का विकास होता है, वहां दूसरों को दूसरा नहीं मानता किन्तु उसके साथ एकत्व की भावना रखता है। गांधीजी ने यही किया। वस्त्र को एकत्वपूर्ण बनाने के लिए धागा आवश्यक है वैसे ही एक-दूसरे से जोड़ने के लिये समता की आवश्यकता है। गांधीजी की प्रवृत्ति के पीछे समता की दृष्टि थी। समता का विस्तार अहिंसा का विस्तार था। जैनधर्म का मूल है- अहिंसा, सत्य, अनाग्रह एवं अनेकांतवाद।

जीवन में स्यादवाद का जितना प्रयोग गांधीजी ने किया, उतना दूसरों ने कम किया है। उनमें एक ओर अनुशासन के प्रति दृढ़ निष्ठा थी, दूसरी और वे छोटे बच्चे की बात भी स्वीकार करते थे। वे छोटी-छोटी बात के लिए प्रायश्चित करते थे, वह भी सब के सामने। अपने दोषों को दूसरों के सामने प्रकट करने में संकोच नहीं था। वे सोचते थे कि आश्रम में कोई गलती करता है, वह मेरी ही गलती है। जहां मैं प्रमुख हूं, वहां मेरी दुर्बलता के कारण ही गलती होती है। अनेकों बार उन्होंने दूसरों की गलतियों का स्वयं प्रायश्चित किया था।

सामान्यत: व्यक्ति अपनी भूल को स्वीकार नहीं करता, बल्कि अड़ जाता है, क्योंकि वहां बड़प्पन और मान-अपमान का प्रश्न खड़ा हो जाता है। भूल को स्वीकार न करना ओछेपन की बात है। ऐसा कौन व्यक्ति पूर्ण है जिससे गलती नहीं होती। अपूर्ण हो लेकिन अपने को पूर्ण माने, यह मूल में भूल है।

एक संन्यासी मरुस्थल में गया। उसे भूख लगी तो उसने तुम्बे के पत्ते को तोड़कर खाया। वह खारा लगा तो फल को खाया। वह भी खारा लगा फिर उमने जड़ को खाया। वह भी खारी लगी। तब उसने सोचा जब मूल खारी है तो पत्ते और फूल तो खारे होंगे ही।

जब मूल में ही भूल है तो ऊपर से भूलें होंगी ही। अपूर्ण व्यक्ति भूल को स्वीकार नहीं करता लेकिन भूल को सिद्ध करने के लिए आग्रही बन जाता है। सत्य शोधक अपने को अपूर्ण मानकर चलता है। उसका उदाहरण गांधीजी ने प्रस्तुत किया। लोगों के सामने अपनी भूलें स्पष्टता से स्वीकार कीं। अहिंसा, सत्य और स्याद्वाद, इन तीन दृष्टियों के कारण वे महान बन गए। हजारों में उनका प्रतिबिम्ब आया है।

आचार्यश्री तुलसी कई बार कहते – 'अनेक आए चले गए पर ऐसा व्यक्ति नहीं आया जिसके हाथ से हजारों व्यक्ति बने हैं।' गांधीजी के पास रहने वालों में जो भावना दिखाई देती है, वह दूसरों में नहीं है। शंकर भाई बैंकर अहमदाबाद आए। उन्होंने कहा- 'मैं गांधीजी के पास रहने के लिए गया। गाँधीजी ने कहा- 'तुम क्या कर सकते हो?' वह बोला, 'मैं आपके कपड़े धोऊँगा।' गांधीजी बोले, 'नहीं, तुम नहीं धो सकते।' फिर उसने धोना शुरू किया। दस दिन की साबुन एक दिन में खत्म कर दी।

गांधीजी ने कहा – 'जो इतना अपव्यय करता है, वह काम के योग्य नहीं है।' अधिक पानी गिराने वाले को भी वे अयोग्य मानते थे। उनका सिद्धांत था जो छोटी-छोटी बातों की उपेक्षा कर देता है, वह बड़ी बात की भी उपेक्षा कर सकता है। छोटा छेद भी बर्तन को खाली कर देता है। अधिकांश गलतियां तो छोटी-छोटी ही होती हैं। बड़ी बुराई तो कम ही होती हैं ।

गांधीजी को जैनधर्म से दृष्टि-बीज मिला था। गांधीजी का जीवन जैनधर्म को समान रेखा पर है। टाइम्स पत्र ने दुनिया के धर्मों का उल्लेख किया है। जैनधर्म वही है जो गांधीजी के विचार थे। गांधीजी ने राजनीति में प्रयोग किया, वह जैनधर्म ही था। इसी भ्रम के कारण गांधीजी की व्याख्या से जैनधर्म की व्याख्या कर दी। गांधीजी को जैन संस्कार श्रीमद् रायचन्द से मिले थे। वे स्वयं को जैन नहीं मानते थे। हम भी उनको जैन नहीं मानते लेकिन उनके जीवन में जैन तत्व अवश्य थे।

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर - 313001 (राज.) से प्रकाशित एवं मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित। सम्पादक : रंजना भानावत। फोन : 0294-2429291, मोबाइल - 9414165391, Email : shabdranjanudr@gmail.com, drtuktakbhanawat@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।